श्रीः

भट्टनारायणविरचितः

चमत्कारचिन्तामणिः

(जातकग्रन्थः)

पं० महीधरशर्मकृतभाषाटीकासमेतः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष'-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् २०१५, सन् १९५८.

श्रीगणेशाय नमः

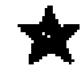


मुद्रक और प्रकाशक--

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक--"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

भूमिका



श्रीगणेशाय नमः । श्रुतिनेत्र ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष चमत्कारी सद्यःप्रत्ययकारीकी महिमा जगद्विख्यातही है परञ्च वर्तमान समयमें कितनेही मतान्तरीय लोग इसे तुच्छ एवं निरर्थक मानने लगे हैं, कारण यह है कि कलिकालमहिमा बाढ़नेसे (देववाणी) संस्कृतभाषाका परिचय इंग्रेजी उदरंभर नवशिक्षितोंमें न्यून हो गया है जितने प्राचीन ग्रन्थ ज्ञानविज्ञानादिबोधक हैं समस्त उक्त भाषामेंही हैं यतः मूलविद्याही यह है इसके अपरिचित लोगोंको कालमहिमा शीघ्रही आक्रमण करती है नहीं तो इतना भी स्मरण सर्व साधारणमें होही जाता कि भारतवर्षके आर्यजनोंके समस्त वर्णाश्रम धर्म जन्मादिसंस्कार भूत भविष्य कर्म फलज्ञान इष्टानिष्ट, हानि, लाभ, सुख, दुःख आदि समस्त कृत्योंमें क्या बिना ज्योतिषशास्त्र काम चलता है ? यदि नहीं है तब तो केवल नास्तिकताही ठहरी आर्यजनोंके अतिरिक्त मुसलमान इंग्रेजी आदि जन भी तो इसे फलप्रकरणमें जानने मानने लगे हैं हमारा तो मूल शास्त्रही है, संस्कृत वाणीका अल्प प्रचार देख सर्व साधारणको ज्योतिषका चमत्कार विदित करानेके लिये एवं अल्पही परिश्रमसे ज्योतिषका फलादेश जनानेके हेतु भारत-

वर्षमें विख्यात " श्रीवेंकटेश्वर " यन्त्रालयाधीश श्रीकृष्णदासात्मज खेमराज अनेक ग्रन्थोंका भाषान्तर कराय प्रचार कर रहे हैं इन्हीं महाशयोंकी आज्ञानुसार मैं पं० महीधरशर्मा राजधानी टीहरी जिला गढ़वालनिवासी चमत्कारचिन्तामणि नाम ग्रन्थकी भाषाटीका करता हूँ जिससे समस्त भाव फलमें ही फलादेश सर्वसाधारण जान सकते हैं गणित एवं योग सम्बन्ध आदि कठिन विचार कुछ नहीं केवल ग्रहकुण्डली मात्र देखनेसे फलादेश ज्ञात हो जाता है जो मैंने बृहज्जातक नीलकण्ठी आदिकी भाषाटीका की है उनसे किञ्चिन्मात्र ज्योतिषका बोध होना आवश्यक है इसमें वह भी नहीं हिन्दी भाषामात्रका ज्ञाता इससे काम ले सकता है और भी पाठकोंके प्रसन्नार्थ युक्ति की गयी है कि जो भावफल वैषयिक कुछ कुछ वार्ता विशेष हैं वेभी ग्रन्थान्तरोंके मत लेकर इसके प्रत्येक श्लोकके टीकामें शामिल लिख दिये हैं जिससे पाठकोंके अन्य ग्रन्थोंकी अपेक्षा न रहे ।

निवेदक-

महीधर शर्मा

श्रीगणेशाय नमः

चमत्कारचिंतामणिः

भाषाटीकासहितः



गणेशं गुरुं शंकरं वेंकटेशं प्रणम्याथ मुम्बांघ्रिपद्मं हृदब्जे ॥ निधायाधुना बालबोधाय टीकां धरान्तोमही भाषया सन्तनोति ॥ चमत्कारचिन्तामणेर्भावपंक्तेः ॥ स्वबुद्ध्याल्पया टीहरीराजधान्याम् ॥ नगाब्ध्यंकभूसंमिते वैक्रमीये मुदा श्रेष्ठिनोऽनुज्ञया साधुवृत्तेः ॥

अर्थ–भाषाकार ग्रन्थादिकमें विघ्नविघातार्थ मंगलाचरण प्रयोजनसहित प्रगट करता है कि गणेश,स्वगुरु, शिव,वेंकटेश्वरको प्रणामकरके एवं मुम्बादेवीके चरणकमल अपने हृदयकमलमें धारण कर इस समयमें बालकोंके बोधके लिये राजधानी टीहरीनिवासी महीधरशर्मा चमत्कारचिन्तामणिग्रहभावफलोंकी भाषाटीका विक्रम सम्वत् १९४७ में सज्जन प्रशंसनीय यद्वा वणिग्वृत्तिमान् श्रीगंगाविष्णुजीकी आज्ञानुसार प्रसन्नतापूर्वक अपनी अल्प बुद्ध्यानुसार प्रकट करता है ॥

श्रीगणेशाय नमः

चमत्कारचिंतामणिः

भाषाटीकासहितः



गणेशं गुरुं शंकरं वेंकटेशं प्रणम्याथ मुम्बांघ्रिपद्मं हृदब्जे ॥ निधायाधुना बालबोधाय टीकां धरान्तोमही भाषया सन्तनोति ॥ चमत्कारचिन्तामणेर्भावपंक्तेः ॥ स्वबुद्धयाल्पया टीहरीराजधान्याम् ॥ नगाब्ध्यंकभूसंमिते वैक्रमीये मुदा श्रेष्ठिनोऽनुज्ञया साधुवृत्तेः ॥

अर्थ-भाषाकार ग्रन्थादिकमें विघ्नविघातार्थ मंगलाचरण प्रयोजनसहित प्रगट करता है कि गणेश, स्वगुरु, शिव, वेंकटेश्वरको प्रणामकरके एवं मुम्बादेवीके चरणकमल अपने हृदयकमलमें धारण कर इस समयमें बालकोंके बोधके लिये राजधानी टीहरीनिवासी महीधरशर्मा चमत्कारचिन्तामणिग्रहभावफलोंकी भाषाटीका विक्रम सम्वत् १९४७ में सज्जन प्रशंसनीय यद्वा वणिग्वृत्तिमान् श्रीगंगाविष्णुजीकी आज्ञानुसार प्रसन्नतापूर्वक अपनी अल्प बुद्धयानुसार प्रकट करता है ॥

अथ रविभावफलानि

तनुस्थो रविस्तुङ्गयष्टिं विधत्ते मनः संतपेद्दारदायादवर्गात् ॥ वपुः पीड्यते वातपित्तेन नित्यं सवै पर्यटन् ह्रासवृद्धिं प्रयाति ॥ १ ॥

अर्थ—प्रथम सूर्यके भाव फल कहते हैं कि जिसके जन्ममें सूर्य लग्नका हो तो उसका शरीर एवं नासिकादि अवयव ऊँचे हों स्त्री पुत्र आदियोंसे मन संतप्त (संताप-सहित) रहे वायुसंयुक्त पित्तरोग (जैसे गरम व्याधि आदि) से शरीर पीडित रहे तथा देशान्तरोंमें फिरा करे अर्थात् एक जगह स्थिति निरन्तर न रहे और धन यद्वा ऐश्वर्य कभी घटता कभी बढता रहे एकस्वरूप निरन्तर बना न रहे (प्रकारान्तरसे फल है कि) रोगी रहे शरीरकी कला पूर्ण न रहे ईर्ष्यावान् एवं गुस्सेबाज हो दूसरेकी निन्दा योग्य हो प्रतापक रहे ॥ १ ॥

धने यस्य भानुः सभाग्याधिकः स्याच्चतुष्पात्सुखं सद्व्यये स्वं च याति ॥ कुटुम्बे

कलिर्जायया जायतेऽपि क्रिया निष्फला
याति लाभस्य हेतोः ॥ २ ॥

अर्थ–जिसका सूर्य लग्नसे दूसरे भावमें हो तो वह मनुष्य भाग्यशाली (अधिकैश्वर्यवान्) होवे, घोडे, हाथी, गौ, बैल आदि चतुष्पद जीवका अपने कुलानुमान सुख पावे (कुलानुमान यह है कि राजा एवं धनी लोगोंके हाथी, घोडे आदि और कृषकादि जनोंके गौ, भैंस, बकरी आदि स्वबुद्धि बलसे ज्योतिषी कहते हैं बुद्ध्या वा जातिकुलदेशान्) यह वराहमिहिरका वचन प्रमाण भी है और उसका धन दान धर्मादि अच्छे कार्योंमें व्यय होवे स्त्रीके निमित्त(स्त्रीवश होनेसे)कुटुम्ब (अपने बंधुवर्गमें) कलह होवे तथा लाभके निमित्त बडे बडे यत्न अनेक प्रकारसे करे तोभी अपनेही अहंकार वा कम नसीबीसे संपूर्ण यत्न व्यर्थ करके लाभकी हानि करे. (प्र०) धनहीन हो कृतघ्न(भलेका बुरा-माननेवाला) श्रद्धारहित कुमित्र युक्त ठग होवे ॥२॥

तृतीये यदाहर्मणिर्जन्मकाले प्रातापाधिकं विक्रमं चातनोति॥तदा सोदरैस्तप्यते तीर्थचारी सदारिक्षयः सङ्करेशं नरेशात् ॥ ३ ॥

अर्थ—सूर्य लग्नसे तीसरा जिसका हो वह प्रतापी और पराक्रमी होता है यद्वा प्रताप झलकता हो जिसमें ऐसा पराक्रम पुरुषार्थ करता है और सहोदर भाइयोंसे संतप्त (संतापयुक्त) रहे तीर्थयात्रा करनेवाला होवे संग्राममें सर्वदा शत्रुओंका क्षय करे और राजासे कल्याण (मंगल) पावे (प्र०) निरोगी दृष्टिहीन परोपकारी विख्यात विवेकी विद्यावान् होवे ॥ ३ ॥

तुरीये दिनेशेऽतिशोभाधिकारी जनःसंल्भेद्विग्रहं बन्धुतोऽपि ॥ प्रवासी विपक्षाहवे मानभङ्गं कदाचिन्न शांतं भवेत्तस्य चेत्॥४॥

अर्थ—जिस मनुष्यका सूर्य जन्ममें लग्नसे चौथा हो तो शोभायुक्त तथा अधिकारी स्वतः सिद्ध अर्थात् खुद मुखत्यार होवे यद्वा अतिशोभायुक्त जो अधिकार है

जिनसे सर्व साधारणमें अतिमान्यता मिलती है ऐसे द्रव्य (पदार्थ वाला होवे और बंधुवर्ग तथा अन्य जिस किसी मनुष्यसे कलह रहे तथा शत्रुसंग्राममें मानहानि (इज्जतहतक) होवे विदेशमें अधिक रहे और उसका मन सर्वदा व्याकुल रहे कदाचित् भी शांत न रहे. (प्र०) कृतघ्न ईर्षालु दूसरेकी हानि करनेवाला धन-रहित होवे उद्धतस्वभाव स्त्रीके वशवर्ती झगडालु विरूप देह झूंठ बोलनेवाला होवे ॥ ४ ॥

सुतस्थानगे पूर्वजापत्यतापी कुशाग्रा मति-
र्भास्करे मन्त्रविद्या॥रतिर्वञ्चने संचकोऽपि
प्रमादी मृतिः क्रोडरोगादिजा भावनीया ॥५॥

अर्थ—जिसके जन्ममें सूर्य पंचम भावका हो तो अपने प्रथम पुत्रका संताप अर्थात् इसके शोकसे क्लेश पावे और नीतिशास्त्र यद्वा (आगम) मंत्रशास्त्र जान-नेवाला होवे प्रमाद करनेवाला होवे असावधान रहे धनसंचय करे बुद्धि उसकी कुशके अग्र भागके तुल्य

तीक्ष्ण अति सूक्ष्म वस्तु विचारशील होवे तथा लोगोंके ठगनेवाला ठग भी होवे और कुक्षिरोगादिसे उसकी मृत्यु जाननी (प्र०) अल्पसंतान होवे नम्र-रहित दुष्टकाम करनेवाला व्यसनी पित्ताधिक बहुत शत्रुवाला होवे ॥ ५ ॥

रिपुध्वंसकृद्भास्करो यस्य षष्ठे तनोति व्ययं राजतो मित्रतो वा ॥ कुले मातुरापच्चतुष्पाद-तो वा प्रयाणे निषादैर्विषादं करोति ॥ ६ ॥

अर्थ–लग्नसे छठे सूर्यका फल है कि शत्रु जीतने वा मारनेवाला होवे तथा मित्रके कार्यनिमित्त और राजाके दंडमें धनव्यय (धनक्षय) करे यात्रा (सफर) में निषादों (भीलों) से विवाद और क्लेश पावे अर्थात् चोरोंसे लूटा जावे मामाके कुलकी हानि यद्वा उक्त कुलसे विपत्ति पावे तथा घोडे आदि पशुओंसे आपत्ति पावे (प्र०) शत्रुरहित रूपवान् नम्र सुजनसंगी अतिथिपूजक बांधवोंका प्रिय होवे ॥ ६ ॥

द्युनाथो यदा द्यूनयातो नरस्य प्रियातापनं पिण्डपीडा च चिंता ॥ भवेत्तुच्छलब्धिः क्रये विक्रयेऽपि प्रतिस्पर्द्धया नेति निद्रां कदाचित् ७

अर्थ–जिसके जन्ममें सूर्य सप्तम हो तो उसकी स्त्री क्लेशी रहे तथा शरीरभी पीडित रहे, सर्वदा चिंतायुक्तभी रहे व्यापार (वस्तुक्रयविक्रय) में लाभ अल्पतर होवे और मत्सर वा वादविवादके चिन्ताओंमें कभी नींद न आवे (भ०) कुरूपी दुष्टस्त्रीवाला कफ वायुरोगयुक्त होवे तथा मित्रता किसीसे न रक्खे कामातुर होवे॥७॥

क्रिया लम्पटं त्वष्टमे कष्टभाजं विदेशीयदारान् भजेद्धाप्यवस्तु ॥ वसुक्षीणता दस्युतो वा विलम्बाद्विपद्रुह्यता भानुरुग्रं विधत्ते ॥८॥

अर्थ–जन्मलग्नसे सूर्य आठवां हो तो वह मनुष्य समस्त व्यवहारोंमें धूर्त हो इसी धूर्ततासे कष्ट भी पावे परदेशीय एवं असमान गोत्रजा और वेश्यासे गृहकृत्य (घरद्वार) करे अर्थात् अगम्यागामी अभक्ष्यभक्षी

होवे चोरसंगसे और आलस्यसे धन क्षीण होवे गुप्त विपत्ति पावे यद्वा परस्त्रीसंसर्गसे गुह्येन्द्रिय रोगादि करके पीडित रहे (प्र०) परदेशवासी हीनकर्मा क्षुधा तुर रोगयुक्त लोकानुराग (प्रेम) रहित होवे ॥८॥

दिवानायके दुष्टता कोणयाते न चाप्नोति चि-
न्ताविरामोऽस्य चेतः ॥ तपश्चर्ययाऽनिश्चया-
पि प्रयाति क्रिया तुंगतां तप्यते सोदरेण ॥९॥

अर्थ—जिसका सूर्य नवम स्थानमें हो तो अकस्मात् भी तप जप नियमादि करनेवाला हो इसी कृत्यके प्रभावसे पूज्यता (माननीयता) पावे, दांभिक होनेपरभी लोकमान्यता पावे तथा भाइयोंके कारण संतापयुक्त रहे दुष्टतासे चित्त नित्य चिन्ताकुल रहे कभी शांति न पावे (प्र०) विख्यात कीर्ति राजाका प्रिय पराये धनसे धनवान् धर्मरहित बुद्धिहीन होवे ॥ ९ ॥

प्रयातेंऽशुमान् यस्य मेषूरणेऽस्य श्रमःसिद्धि-
दो राजतुल्यो नरस्य ॥जनन्यास्तया यातना-
मातनोति क्रमः संक्रमेद्वल्लभैर्विप्रयोगः ॥१०॥

अर्थ—जिसका सूर्य दशवें स्थानमें हो तो उसकी माता रोगसे क्लेशित रहे और पराक्रमी होवे राजाओं-केसे तुल्य सकलोद्यमी होवे प्रियजन मित्र स्त्रीपुत्रोंसे विषमता रहनेसे ग्लानि (दिक्कत) रहे. (प्र०) धनी भाग्यशाली बहुत मित्रवाला रूपसौभाग्ययुक्त विनययुक्त गुरुदेवताका भक्त होवे ॥ १० ॥

रवौ संलभेत्स्वं च लाभोपयाते नृपद्वारतो राज-मुद्राधिकारात् ॥ प्रतापानले शत्रवः सम्पतंति श्रियोऽनेकधा दुःखभंगोद्भवानाम् ॥ ११ ॥

अर्थ—सूर्य ग्यारहवें भावमें हो तो वह मनुष्य राज-द्वारासे धन पावे तथा राजाके दिये मुद्राधिकार हुकूमतसे एवं अनेक प्रकारके राज्याधिकारोंके प्रभावसे घोड़ा हाथी आदि संपत्ति पावे तथा इसके प्रतापरूपी अग्निमें शत्रु पड़ते रहें अर्थात् इसके शत्रु परास्त हो जावें और यहभी फल है कि संतानके लिये दुःखितभी रहे.(प्र०) धनी भाग्यशाली विचारशील उत्तम भोजन वस्त्रादि

भोगनेवाला वाहनयुक्त प्रिय वाणी बोलनेवाला काम-कला (रतिक्रीडा) में चतुर होवे ॥ ११ ॥

रविर्द्वादशे नेत्ररोगं करोति विपक्षाहवे जायतेऽसौ जयश्रीः ॥ स्थितिर्लब्धया लीयते देहदुःखं पितृव्यापदो हानिरध्वप्रदेशे ॥ १२ ॥

अर्थ—जिसके जन्मलग्नमें बारहवें स्थानमें सूर्य हो तो उसके मंददृष्टि (नेत्रदोष) रहे शत्रु जीतनेके अभिलाषासे संग्राममें स्थिति पायकर विजयका डंका बजावे परंच मार्गमें धनहानि भी होवे और शरीरमें क्लेशसे अति दुःखी रहे पिता एवं चाचा ताऊके पक्षसे क्लेश मिले यद्वा उसी संग्राम संभव मार्गमें उक्त जनोंके डाकूसे लूट जाने अथवा मारे जानेसे आपत्ति हो, दुर्जनोंके संघसे धन व्यर्थ लुटावे शत्रुसे नित्य संतप्त रहे दुष्ट कर्म करे स्वयं दुष्ट होवे ॥ १२ ॥

इति सूर्यभावफलानि

अथ चन्द्रभावफलानि

विधुर्गोकुलीराजगः सन्वपुस्थो धनाढ्य-श्चलावण्यमानन्दपूर्णम् ॥ विधत्ते धनं क्षीण-देहं दरिद्रं जडं श्रोत्रहीनं नरं शेषलग्ने॥१॥

अर्थ–अब चंद्रभावफल कहते हैं कि जिसके जन्मका चंद्रमा लग्नमें मेष कर्कट वृष राशिमेंसे किसीसे हो तो धनाधीश बहुत धनका मालिक होवे, चित्त नित्य आनंदसे परिपूर्ण रहे और राशियोंका हो तो अधर्मी होवे नीच काम करे देह क्षीण निर्बल रहे वीर्य उसका क्षीण रहे दरिद्र धनहीन होवे जडमति(मूर्ख बुद्धि) होवे अथवा कर्णेंद्रिय रहित (बहिरा) होवे. (प्र०) पूर्ण चन्द्र हो तो भाग्यशाली सुरूप होवे चंद्रमा क्षीण हो तो शरीर फटे फटे कुरूप होवे तथा पापी झूंठा मित्र रहित होवे ॥ १ ॥

हिमांशौ वसुस्थानगे धान्यलाभः शरीरेऽतिसौ-ख्यं विलासोऽङ्गनानाम् ॥ कुटुम्बे रतिर्जायते

तस्य तुच्छं वशं दर्शने याति देवांगनापि ॥ २ ॥

अर्थ—चंद्रमा दूसरे भावमें हो तो शरीर उसका अति सुखी रहे स्त्रियोंके विलासका सौख्य रहे कुटुंबमें प्रीति अल्प रहे तथा रूपवान् होवे जिसके देखनेसे देवताओंकी स्त्रियांभी मोहित होकर वशवर्ती हो जावें इतर मनुष्योंकी तो क्या कहनी है. (प्र०) धनवान सर्व संपत्तिवाला प्रिय वचन बोलनेवाला देवता ब्राह्मणोंका भक्त बडा प्रतापी मित्रसंयुक्त होवे ॥ २ ॥

विधौ विक्रमेविक्रमैर्णैति वित्तं तपस्वी भवेद्भामिनीरञ्चितोऽपि ॥ कियच्चिंतयेत्साहजं तस्य शर्मप्रतापोज्ज्वलो धर्मिणो वैजयंत्या ॥ ३ ॥

अर्थ—जिसके लग्नसे चंद्रमा तीसरा हो तो विक्रम उद्यमसे वित्त (धन) संग्रह करे और स्वरूपवान् स्त्री उसे अपने रूप यौवन छटासे लुभावे तो भी वह जितेंद्रिय तपस्वी धर्मात्मा होवे धर्मसे लोभादिकोंको जीत रक्खे तथा यशस्वी प्रतापवान् होवे भाइयोंका सुखभी बहुत

होवे. (प्र.) रूपवान् भाग्यशाली रमणीय स्त्रियोंका प्यारा समस्त कला विद्या, विद्या जाननेवाले संतानमें प्रेम रखनेवाला होवे और बेटे नाती पोते बहुत होवें॥ ३॥

यदा बन्धुगो बांधवैरत्रिजन्मा नृपद्वारसर्वा-
धिकारी सदैव॥वयस्यादिमे तादृशंनैव सौ-
ख्यं सुतस्त्रीगणात्तोषमायाति सम्यक्॥४॥

अर्थ—चंद्रमा लग्नसे चतुर्थभावमें हो तो वह मनुष्य बांधव इष्टमित्रोंसे सुख पावे तथा स्त्रीपुत्रोंसे संतोषप्रसन्नता पावै और राजद्वारमें सर्वाधिकारी (समस्त कार्योंमें अधिकारी)होवे ऐश्वर्यसे उन्मत्त एवं दांभिक घमंडखोरभी होवे पहिली अवस्था बीस पचीसवर्ष पर्यंत ऐसा सुख न पावे दूसरी अवस्थासे पूर्ण फल मिलता है(प्र०) बहुत सुख भोगनेवाला विख्यात स्त्रियोंका प्रिय गुरुदेवताका भक्त नम्र निरोगी तथा शत्रुरहित होवे॥४॥

यदा पञ्चमे यस्य नक्षत्रनाथो ददातीह संतान-

संतोषमेव ॥ मतिं निर्मलां रत्नलाभं च
भूमिं कुसीदेन नानाप्तयो व्यावसायात् ॥५॥

अर्थ—जिसका चंद्रमा लग्नसे पंचम भावमें हो उसको संतानका सुख मिले बुद्धि निर्मल रहे रत्नादिलाभ होवे राजसेवा अन्यप्रकारसे भूमिभी मिले तथा किसीकालांतरीय व्यवहारसे जो उद्यम है उनसे अनेक प्रकारसे लाभ उठावे (प्र०) पुत्रवान् विद्यावान् देवताब्राह्मणोंका भक्त निष्कपट स्वभाव प्रियवाणी बोलनेवाला राजाका प्रिय होवे तथा शत्रु उसके न होवें ॥ ५ ॥

रिपौ राजते विग्रहेणापि राजाजितास्तेपि भूयो
विधौ संभवन्ति ॥ तदग्रेऽरयो निष्प्रभा भूय-
सोऽपि प्रतापोज्ज्वलोमातृशीलो न तद्वत् ॥६॥

अर्थ—चंद्रमा छठा हो तो वह मनुष्य बहुत शत्रुवाला होवे यदि राजाभी इसका शत्रु हो जावे तोभी इसका प्रताप उज्ज्वलितही रहे अपने प्रभावसे शोभायमान रहे तथा सर्वशत्रु इससे पराजित(हारे)ही रहें तो भी शत्रु-

ओंके विना कभी खाली न रहे पुनः उठते ही रहें और अमातृभक्त अपनी माताकी सेवामें अच्छा न रहे. (प्र०) प्रधानपुरुष होवे परंतु रोगी रहे शत्रु नित्य दुःख देवे शरीर कुरूप हो दुर्बुद्धि हो सुख न पावे दूसरेको ठगनेवाला होवे ॥ ६ ॥

दद्देद्दारशं सप्तमे शीतरश्मिर्धनित्वं भवेदध्ववाणिज्यतोऽपि ॥ रतिं स्त्रीजनेऽनिष्टभुग्लुब्धचेताः कृशः कृष्ण पक्षे विपक्षाभिभूतः ॥ ७ ॥

अर्थ—लग्नसे सप्तम चन्द्रमा स्त्रीसुख देता है तथा मार्ग कर्म एवं व्यापारसे यद्वा देशांतरीय व्यापारसे धनवान् करता है और स्त्रीसंग विशेष होता है किंच कृष्णपक्षमें स्त्रियोंके साथ प्रेमवार्तालाप दृष्टि प्रेममात्र करता है रतिसुख नहीं और मीठे पदार्थोंमें चित्त अतिलोभी रहता है तथा चन्द्रमा क्षीण हो तो सर्वदा शत्रुओंसे हारा हुआ भी रहता है (प्र०) धर्मात्मा होवे दयावान् प्रसन्नमूर्ति ऐश्वर्यवान् विख्यातकीर्ति सद्बुद्धि होवे ॥ ७ ॥

सभा विद्यते भेषजी तस्य गेहे पचेत्काहिंचि-
त्काथिमुद्गोदकानि ॥ महाव्याधयो भीतयो
वारिभूताःशशी क्लेशकृत्संकटान्यष्टमस्थः॥८॥

अर्थ–जिसके चन्द्रमा अष्टमभावमें हो तो उसके घरमें बहुधा वैद्योंके समाज रहें एवं मूँगका पानी पकता रहे अर्थात् ज्वरादिरोग लगेही रहे अथ च (वारि-भूताः भीतयः) जलसे है निदान जिन्होंका ऐसे पांडु क्षय आदि रोग होवें यद्वा जलमें डूब जानेका भय होवे और अनेक संकट दुर्जनोंसे आपत्ति भी होती है यह अष्टम चन्द्रमा सर्वदा कष्टही देनेवाला होता है. (प्र०) अल्पपराक्रमी अल्पायु झूँठ बोलनेवाला निर्दयी (कठोर) स्नेहरहित परस्त्रीगमन करनेवाला व्यर्थ भ्रमण करनेवाला इष्ट मित्र भाइयोंसे रहित होवे॥८॥

तपोभावगस्तारकेशो जनस्य प्रजाश्च द्विजा
वन्दिनस्तं भवन्ति ॥ भवत्येव भाग्याधिको
यौवनादेःशरीरे सुखं चन्द्रवत्साहसं च ॥९॥

अर्थ—जिसके चन्द्रमा नवम स्थानमें हो तो उसकी स्तुति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और मागध बंदिजन सभी करते हैं अर्थात् स्तुति करने योग्य वह पुरुष होता है क्योंकि वह धन यौवन संपन्न तथा शरीर सुखी रहता है साहसी होता है चतुरबुद्धि रहता है और चन्द्रमाके समान दर्शनीय होता है अथवा चन्द्रमाके तुल्य कभी कभी छटा घटती बढती जाती है. (प्र०) मित्र बहुत होवें अन्नादि बहुत हों शत्रु उससे नम्र रहे सर्वसिद्धिवाला होवे सज्जन उसकी नित्य प्रशंसा करे ९.

सुखं बान्धवेभ्यः खगे धर्मकर्मा समुद्राङ्गजेशं नरेशादितोऽपि ॥ नवीनाङ्गनावैभवे सुप्रियत्वं पुरोजातके सौख्यमल्पं करोति ॥ १० ॥

अर्थ—चन्द्रमा दशम भावमें हो तो मनुष्य पुण्य करनेवाला होवे बांधवोंसे सुख मिले तथा राजा महा-राजा आदि श्रीमंत लोगोंसे कल्याण मिले तथा नवीन

स्त्रियोंका स्वामित्व एवं प्रियत्व मिले अर्थात् नवयौवना स्त्रियोंके साथ हासविलासादि सुख होवे प्रथम पुत्रसे अल्प सुख होवे अथवा भृत्य (नौकर) आदमियोंका सुख बहुत कम मिले (प्र०) राजाका प्रिय होवे इष्टमित्रोंसे प्रतिष्ठा मिले अतिथियोंको प्रिय माने गुरु तथा देवताओंका भक्त होवे ॥ १० ॥

लभेद्भूमिपादिन्दुनालाभगेन प्रतिष्ठाधिकाराम्बराणि क्रमेण ॥ श्रियोऽथ श्रियोन्तःपुरे विश्रमन्ति क्रिया वैकृती कन्यकावस्तुलाभः ॥ ११ ॥

अर्थ–चन्द्रमा ग्यारहवें भावमें हो तो राजासे क्रमपूर्वक वस्त्र धन और अधिकार हुकूमत मिले और अंतःपुर घरमें स्त्रियां धनादि ऐश्वर्यसंपन्न होकर प्रसन्नतासे स्थिर रहें तथा अनेक पदार्थोंसे यद्वा व्यापारादिसे लाभ बहुत होवे जो कुछ कृत्य करे उसमें विकार होवे और कन्यालाभ होवे (प्र०) चतुर होवे

सर्वदा लाभ होवे रूपवान् तथा (उदार) सुखी होवे सज्जनोंमें अनुराग रक्खे शत्रुहीन रहें ॥ ११ ॥

शशी द्वादशे शत्रुनेत्रादिचिन्ता विचिन्त्यः सदा सद्व्ययो मंगलेन ॥ पितृव्यादिमात्रादितोन्तर्विषादो न चाप्नोति कामं प्रियाल्पप्रियत्वम्॥१२॥

अर्थ—जो चंद्रमा बारहवां हो तो शत्रुसे भय होवे नेत्र आदि अंगोंमें रोग होनेसे चिंता भी जानना तथा विवाहादि मंगल कार्यमें सद्व्यय (उत्साहसहित धन खर्च) होवे और चाचा ताऊ मामा और अनेक कुटुंबसे मनमें विषाद (दुःख) होवे अर्थात् उनके प्रेमसंबंध न रहे तथा मनकी अभिलाषा इन मनुष्यकी कदाचितही पूर्ण न होवे. (प्र०) रक्तसंबंधी रोगसे पीडित रहे वैरवान् रहे शत्रु बहुत रहें आयु भी कम होवे झूठ बहुत बोले ॥१२॥ इति चन्द्रभावफलानि ।

अथ भौमभावफलानि

विलग्ने कुजे दण्डलोहादिभीतिस्तपेन्मानसे

केसरी किं द्वितीयः ॥ कलत्रादिघातः शिरो-
नेत्रपीडाविपाके फलानां सदैवोपसर्गः ॥१॥

अर्थ–मंगलका भावफल कहते हैं कि जिसके जन्ममें मंगल लग्नका हो तो दंड (लठ्ठ) यद्वा लोह श्रृंखला बेडी हथकडी शूली आदिसे भय होवे और स्त्री पुत्रादि नाश होवे शिर तथा नेत्रोंमें पीडा होवे और जो कुछ कार्य करै उसको परिणाम (नतीजा) में विघ्न हो जावे कार्यसिद्धि न होने पावे इस कारण मन संतप्त रहे और उद्यमी होवे कार्योद्यममें तो सिंह समान अर्थात् दूसरा सिंहसा होवे.(प्र०)वातपित्त रोगसे पीडित रहे कुरूप हो शक्ति (सामर्थ्य) रहित बुद्धिहीन निरर्थक कार्योंमें धनव्यय करे कृनघ्न भी होवे ॥१॥

भवेत्तस्य किं विद्यमाने कुटुंबे धनेऽङ्गारको
यस्य लब्धे धने किम् ॥ यथा त्रायते मर्कटः
कण्ठहारं पुनः सन्मुखं को भवेद्वादभग्नः॥२॥

अर्थ–जिसके मंगल लग्नसे दूसरे भावमें हो तो उसके

पास धन हो और धनका आगमभी होता रहे तौभी कुटुंब (अपने मनुष्यों)के अर्थ उक्त धन न आवे अर्थात् इस धनका फलोदय किसीकोभी न होवे जैसे कोई गुंज (लाल रत्तियों)के माला बनाकर (मर्कट) वानरके गलेमें पहिनाय दे तो वह वानर उस मालाको उत्तम पदार्थ जान क्षणमात्र प्रसन्न होकर रक्षा करता है ऐसे वह कृपणभी धनकी रक्षा करता है तथा मूर्खभी होवे अर्थात् इसके वाग्वादमें कोई न जीते तथा एकवार जो हार गया वह फिरके उसका मुकाविला न करे.(प्र०) धनहीन सर्वसाधारणसे विरोधी, कठोरवाणीवाला, दुष्ट बुद्धि प्रतापरहित होवे मैत्री किसीसे न रक्खे ॥२॥

कुतो बाहुवीर्यं कुतो बाहुलक्ष्मीस्तृतीयो न चेन्मंगलो मानवानाम् ॥ सहोत्थव्यथा भण्यते केन तेषां तपश्चर्यया चोपहास्यं कथं स्यात् ३॥

अर्थ—जिसके मंगल तीसरे स्थानमें भी न हो तो उस मनुष्यको भुजबल बाहुका (पराक्रम) कहांसे होवे

तथा अपने बाहुबलसे कमाया धन कहांसे होवे अतः उसके भाइयोंकी पीडा कौन कहे और तपस्या बिगड़ जानेसे लोकमें उपहास हंसी कैसी होवे अर्थात् तीसरे मंगलवाला मनुष्य पराक्रमी तथा अपने पराक्रमसे कमाये धनयुक्त होवे भ्रातृपीडा होवे तपादिकमें उप-हास होवे. (प्र०) भाइयोंका तावेदार रहे निरोगी तथा जीतनेवाला होवे राजासे मान पावे धनमान् पुत्रवान् तथा उदार धर्मात्मा होवे ॥ ३ ॥

यदा भूसुतः संभवेत्तुर्यभावे तदा किं ग्रहाः सानु-कूला जनानाम् ॥ सुहृद्वर्गसौख्यं न किंचिद्वि-चिंत्यं कृपावस्त्रभूमिर्लभेद्भूमिपालात् ॥ ४ ॥

अर्थ—जिनका मंगल चतुर्थमें हो तो उन मनुष्योंके अन्य ग्रह सानुकूल (शुभ फल देनेवाले) हों तोभी क्यों कर सकते हैं अर्थात् व्यर्थ हैं तथा उन मनुष्योंके बंधु मित्र माता आदियोंका सुख कुछभी न होवे शुभफल इतनाहीहै कि राजाकी कृपासे वस्त्र भूमि मिलतेहैं(प्र०)

सुख न पावें घमंड इसका न रहने पावे बुद्धिहीन तथा बंधुहीन रहे कार्यमें तत्पर रहे खर्च बहुत करे निंदकभी होवे ॥ ४ ॥

कुजे पञ्चमे जाठराग्निर्बलीयान्न जातं नु जातं निहन्त्येक एव ॥ तदानीमनल्पा मतिः किल्बिषेऽपि स्वयं दुग्धवत्तप्यतेऽन्तःसदैव ॥५॥

अर्थ–मंगल पंचम भावमें हो तो उस मनुष्यका उदराग्नि प्रबल होता है अर्थात् क्षुधा एवं पाचनशक्ति बहुत होती है तथा पापकर्ममें बहुत बडी बुद्धि होती है आपभी मनमें उपलेकी आँचके दूधके तुल्य सर्वदा संतप्त (व्याकुल) रहता है और एकही पंचम मंगल जितने पुत्र होते जावें उतनोंकोही मारता जाता है। (प्र०)संतानहीन रहे, पापी होवे औरोंसे भर्त्सना(झाडू) पावे, विद्याहीन रहे, मित्रता भी किसीसे न रक्खे॥५॥

न तिष्ठन्ति षष्ठेऽरयोऽङ्गारके वै तदंगैरिताः संगरे शक्तिमंतः ॥ मनीषासुखी मातुलेयो न तद्वद्विलीयेत वित्तं लभेतापि भूरि॥६॥

अर्थ–जिसका मंगल छठे भावमें हो तो उसके शत्रु इसके किसी अंगमात्रसे डरकर सन्मुख न ठहर सकें अंग नेत्रकी दूरदृष्टि आदि जानना अथवा स्वाम्यमात्यादि राजाओंकेभी होते हैं तथा उक्त मनुष्यके किसी अमात्य मन्त्री आदिसे बलवान् हो तो भी हारकर सन्मुख नहीं देख सकते हैं तथा बुद्धि चतुर होवे उसके मामाका पुत्र सुखी न रहे और धन एक वार नष्ट होकर फिर धनवान् होवे शत्रु न होवे अपने कुलमें प्रधान होवे और अच्छा शील (स्वभाव) रक्खे ॥ ६ ॥

अनुद्धारभूतेन पाणिग्रहेण प्रयाणेन वाणिज्य-
तो नो निवृत्तिः ॥ मुहुर्भंगदः स्पर्धिनां मेदि-
नीजः प्रहारार्दनैः सप्तमे दम्पतिघ्नः ॥ ७ ॥

अर्थ–मंगल सप्तम हो तो वह मनुष्य शत्रुसे प्रहार पीडनादि करके बारंबार भंग (हार) पावे तथा स्त्रीपुरुषका नाश करता है अर्थात् पुरुषका सप्तम मंगल

स्त्रीनाश स्त्रीका पुरुषनाश करता है और विवाहकृत्य निश्चय हुएमें भी विघ्न होवे प्रथम विवाहकृत्य बना-बनाया बिगड़ जावे तथा व्यापारके लिये यात्रा (गमन) करनेमें हटकर आना कठिन होवे अर्थात् विवाहके और व्यापारकी आशामें बहुत कालपर्यंत विदेशमें रहे नित्य विदेशवास करे स्त्री अच्छी न होवे कलह करता रहे शत्रु बहुत होवें नीच जनोंमें अनुराग रक्खे साहसी भी होवे ॥ ७ ॥

शुभास्तस्य किं खेचराः कुर्युरन्ये विधानेऽपि चेदष्टमेभूमिसूनुः ॥ सखा किं न शत्रूयते सत्कृतोऽपि प्रयत्ने कृते भूयते चोपसर्गैः॥८॥

अर्थ–जिसका मंगल अष्टम भावमें हो तो नवम स्थानमें शुभ फलदाता ग्रह हों तो भी क्या कर सकता है अर्थात् अन्य शुभफलोंको दबाकर यह मङ्गल अपने क्रूर फलको प्रबलही करता है जैसे अपना परममित्र जिसका भली भांति सत्कार किया हो वहभी शत्रु

स्त्रीनाश स्त्रीका पुरुषनाश करता है और विवाहकृत्य निश्चय हुएमें भी विघ्न होवे प्रथम विवाहकृत्य बना-बनाया बिगड़ जावे तथा व्यापारके लिये यात्रा (गमन) करनेमें हटकर आना कठिन होवे अर्थात् विवाहके और व्यापारकी आशामें बहुत कालपर्यंत विदेशमें रहे नित्य विदेशवास करे स्त्री अच्छी न होवे कलह करता रहे शत्रु बहुत होवें नीच जनोंमें अनुराग रक्खे साहसी भी होवे ॥ ७ ॥

शुभास्तस्य किं खेचराः कुर्युरन्ये विधानेऽपि चेदष्टमेभूमिसूनुः ॥ सखा किं न शत्रूयते सत्कृतोऽपि प्रयत्ने कृते भूयते चोपसर्गैः॥८॥

अर्थ–जिसका मंगल अष्टम भावमें हो तो नवम स्थानमें शुभ फलदाता ग्रह हों तो भी क्या कर सकता है अर्थात् अन्य शुभफलोंको दबाकर यह मङ्गल अपने क्रूर फलको प्रबलही करता है जैसे अपना परममित्र जिसका भली भांति सत्कार किया हो वहभी शत्रु

वनही तो जाता है जो किसी कार्यका आरंभ करे तो अनेक विघ्नोंसे वह कार्य बिगड़ जाता है (प्र०) शरीरमें शस्त्रका दाग है कांतिहीन हो दुष्ट हाकीमकी सेवामें रहे सुमित्रसे चेष्टा विशेष रक्खे कृपा चित्तमें न होवे मित्रता भी न जाने ॥ ८ ॥

महोग्रा मतिर्भाग्यवित्तं महोग्रं तपोभावगो मङ्गलस्तं करोति ॥ भवेन्नादिमः स्यालकः सोदरोवा कुतो विक्रमस्तुच्छलाभोविपाके॥९॥

अर्थ–नवम भावका मंगल मनुष्यको भाग्यवान् एवं धनवान् तेजवान् भी करता है तथा बुद्धि उसकी अतिक्रूरा(निठुरी)होती है और ज्येष्ठ भ्राता तथा ज्येष्ठ शालक (शाला) उसके नहीं रहते तथा जो कुछ उद्यम करे तो उसके परिणाम लाभके समय पर अल्पही प्राप्ति होवे. (प्र०) कुधर्मी कुरूप और भाग्यहीन होवे बंधुवर्गसे रहित होवे अभिमानी न हो देह संतप्त (चिंतायुक्त) रहे मति (बुद्धी) उत्तम न होवे ॥९॥

कुले तस्य किं मंगलो मंगलो नो जनैर्भूयते मध्यभावे यदि स्यात्॥स्वतःसिद्ध एवावतंसीयतेऽसौ वराकोऽपि कण्ठीरवः किं द्वितीयः१०॥

अर्थ—अतिशयोक्ति है कि जिसके मंगल दशम न हो तो उसके कुलमें मंगल कहांसे हो ? अर्थात् दशम मंगल कार्यकर्त्ता है तथा भृत्य (सेवक) बहुत रहते हैं तथा अपनेही उद्यमसे कार्यसिद्धि करके मनुष्योंमें विराजमान रहता है जैसे हीन कुलमें उत्पन्न हुआ भी सिंहके समान पराक्रम करताहै मानो दूसरा सिंहही है. (प्र०) राजासे धनादि पाकर सन्तुष्ट रहे शत्रुनाश होवे अपने बंधु जनोंसे मान पावे चरित उसका प्रशंसनीय होवे अभिमान विख्यात होवे ॥ १० ॥

कुजःपीडयेल्लाभगोपत्यशत्रून् भवेत्संमुखो दुर्मुखोऽपिप्रतापात् ॥ धनं वर्द्धते गोधनैर्वाहनैर्वा सकृच्छून्यतार्थं च पैशुन्यभावात् ॥ ११ ॥

अर्थ—ग्यारहवें भारका मंगल पुत्र तथा शत्रुओंको पीडन करता है इस मनुष्यका मुख दुष्ट हो तो भी अपने

प्रताप बढनेसे सर्वसाधारणमें दर्शनीय(सुरूपवान्)गिना जावे अथवा जो मनुष्य इसका शत्रु है यद्वा इसको दुष्ट वचन कहताहै वहभी इसके प्रतापसे दबकर सुमुख (अच्छी वाणी)कहने वाला हो जावे और गौ,भैंस, घोडे, हाथी, ऊँट आदि वाहन पशुके व्यापारसे धनसंग्रह करे कुछ अंश चोरी व ठगपनेसे धन ग्रहण करनेका भी होवे इस निमित्त लोगोंमें अपना धन छिपाकर निर्द्धन जैसा बना रहे (प्र०) धनवान् राजमानी प्रतापी होवे सर्वत्र पूजा पावे बहुत मनुष्यों पर अधिकार(हुकूमत)रहे॥ ११॥

ताक्षोऽपि तत्सक्षतो लोहघातैः कुजो द्वादशोऽर्थस्य नाशं करोति॥ मृषा किंवदन्ती भयं दस्युतो वा कलिं पारधीहेतुदुःखं विचिंत्यम् ॥१२॥

अर्थ-मंगल बारहवां हो तो धननाश होवे तथा साक्षात् इंद्रके शरीरमेंभी लोहशस्त्रके घातका चिह्न होवे इतर मनुष्योंकी तो क्या कथा है और शत्रुहंताभी होवे तथा झूठी जनश्रुति(कहावत)भी इस मनुष्यकी निन्दा

पक्षमें होवे तथा सिंह सर्पादि दुष्ट जनोंसे भय होवे अथवा कलह होवे (पारधि) भृत्यके हेतु दुःख होवे (प्र० , धन व्यर्थ कार्यमें भी बहुत खर्च करे शत्रु बहुत रहें पापभी बहुत हो दुर्व्यसनी होवे अतिलालची और धर्मरहित भी होवे ॥ १२ ॥

इति भौमफलानि

अथ बुधभावफलानि

बुधो मूर्तिगो मार्जयेदन्यरिष्टं वरिष्ठा धियो वै-खरीवृत्तिभाजः ॥ जना दिव्यचामीकरीभूतदे-हाश्चिकित्साविदो दुश्चिकित्सा भवन्ति ॥ १ ॥

अर्थ–बुधके भावफल कहते हैं कि जन्मलग्नमें बुध हो तो मनुष्यके और ग्रहोंके अरिष्ट फलभी नहीं होते बुद्धि श्रेष्ठ होती है तथा सुवर्णके समान दिव्य शरीर होते हैं वैद्यविद्यामें चतुर होते हैं और तसबीर लिखने आदि शिल्पविद्यासे वृत्ति(कुटुंब पोषणादि आजीवन) करते हैं अथवा कुटिलतामें ऐसे निपुण होते हैं कि

किसीके भी साध्य (वशीभूत) नहीं होते (प्र०) संतान बहुत हो धर्मात्मा तथा मानी होवे बडा प्रतापी गुणोंसे युक्त राजाके सम्मति पूछनेके योग्य होवे और पापोंसे वर्जित रहे ॥ १ ॥

धने बुद्धिमान् बोधने बाहुतेजाः सभासंगतो भासते व्यास एव ॥ पृथूदारता कल्पवृक्षस्य तद्वद्बुधैर्भण्यते भोगतः षट्पदोऽयम् ॥ २ ॥

अर्थ–जिसका बुध दूसरे भावमें हो तो वह बुद्धिमान् एवं स्वबाहुबलसे पुरुषार्थ करनेवाला होता है तथा पण्डितसमाजमें व्यासदेवके समान शोभायमान होता है भोगविषयमें सर्व भोग भोगनेवाला भ्रमरके नाईं रहता है और दानके विषयमें कल्पवृक्षके समान उदार होता है (प्र०) धनवान् प्रियवाणी बोलने वाला देवता ब्राह्मणोंका भक्त पंडित सर्वदा कीर्तिमान् होवे अपने मनुष्योंसे अनुराग रक्खे ॥ २ ॥

वणिङ्मित्रतापण्यकृद्वृत्तिशीलो वशित्वं धियो

दुर्वशानामुपैति ॥ विनीतोऽतिभोगं भजे-
त्संन्यसेद्वा तृतीयेनुजैराश्रितोज्ञे लतावान्॥३॥

अर्थ-बुध तीसरे भावमें हो तो व्यापारियोंके साथ मित्रता रक्खे तथा व्यापारियोंकेसे काम करके आजीवन (गुजर) करता रहे नम्रस्वभाव सुशील होताहै जो किसीके वशवर्ती नहीं होते उनके वशमें रहता है अथवा जो किसीके वश न हो उसे अपनी बुद्धिसे वशमें कर लेवे अपने भाइयोंसे युक्त (जैसे कोई वृक्ष किसी लतासे वेष्टित रहता है) बहुत प्रकारके विषयोंको बंधुवर्गसहित भोगे यद्वा अनेक विषय भोगकर चौथी अवस्थामें गृहस्थसे अलग होकर ईश्वराराधन करे (प्र०) प्रसिद्ध (विख्यात) हो नम्रता न जाने मित्र बहुत होवें स्त्रियोंका अतिप्यारा होवे प्रपञ्चछद्म न जाने ॥ ३ ॥

चतुर्थे चरे चन्द्रजश्चारुमित्रो विशेषाधिकृद्भू-
मिनाथांगणस्य ॥ भवेल्लेखको लिख्यते वा
तदुक्तं तदाशापरैः पैतृकं नो धनं च ॥ ४ ॥

के योगानुभव रूप ज्ञान नेत्रों के सम्मुख प्रतिफलित होते हैं और उन्हीं के द्वारा वह सब विषय सूत्र रूप से स्थान २ में दृष्टि गोचर होते हैं। उन का साधन कर सकने से कुछ २ विषय बोधगम्य हो सकता है इस की विस्तृत आलोचना फिर की जायगी।

वर्तमान वर्ण परिचय पुस्तकों मे वर्ण संख्या में तारतम्य देखा जाता है यह अपनी सुविधानुसार है शास्त्रानुसार नहीं है। 'ङ और ञ' इन दो वर्णों को वैयाकरण किस प्रकार व्यञ्जनों में गिनती करते हैं यह हमारी समझ में नहीं आता है। कारण कि 'ङ' इसका उच्चारण उँ आ से है 'ञ' का उच्चारण 'इं आ' है इन में ँ छोड़ कर सब स्वर ही है इस को अर्द्ध व्यञ्जन (Semi consonant) बोलते तो अच्छा होता।

अन्य वर्णोंके साथ जब ङ (उँ आ) मिला होता है तब इसके उच्चारण में भी प्रभेद रहता है केवल

मारणोच्चाटनादि कर्म कैतव (छद्म) भी करता रहे संतान थोडी होवे वीर्य (पराक्रम) वा धातु अल्प होवे पापयुक्त रहे और नित्य क्षुधासे आतुर रहे इष्टजनोंसे रहित रहे ॥ ५ ॥

विरोधो जनानां निरोधो रिपूणां प्रबोधो यतीनां विरोधोऽनिलानाम् ॥ बुधे सद्व्यये व्यावहारो निधीनां बलादर्थकृत्संभवेच्छत्रुभावे ॥ ६ ॥

अर्थ—बुध छठे भावमें हो तो बहुत मनुष्योंके साथ विरोध (कलह) रहे शत्रु इसे नित्य धरे रहें तथा बद्ध-कोष्ठ निरोग होवे,यतियों (ज्ञानी संन्यासियों) से बोध (ज्ञान)पावे धनको शुभकृत्यमें व्यय करे उत्तम व्यवहार रक्खे और अपने सामर्थ्यसे धन संग्रह करे (प्र०)शत्रु बहुत हों कलह बहुतकरे मांसमें अधिक प्रेम रहे ब्राह्म-णोंकी भक्तिसे विमुख रहे नित्य आतुर (दरिद्री) रहे कामातुर भी होवे ॥ ६ ॥

सुतः शीतगोः सप्तमे संयुवत्या विधत्ते तथा तुच्छवीर्यं च भोगे ॥ अनस्तंगतो हेमवद्देहशोभां न शक्नोति तत्संपदो वानुकर्तुम् ॥७॥

अर्थ–जिसका बुध सप्तम भावमें हो यदि अस्तका न हो तो स्त्रीका सुख विशेष होवे परंतु रतिसमयमें वीर्य-साधारण(वीर्यरोक) जिससे स्त्री सुख मानती है न होवे अर्थात् क्रीडामें शीघ्रही वीर्य स्खलित हो जावे,देहकी कांति सुवर्णके समान उत्तम होवे और इसके धन एवं देहशोभाको किसीकी समृद्धि न मिले अर्थात् धन तथा कांतिमें सर्वोत्तम होवे,यदि सप्तम भावमें अस्तंगत हो तो समस्त उक्तफल थोडे होतेहैं ऐसे नहीं मिलते.(प्र०)सच्च बोले विषय भोगनेवाला होवे पतिव्रता स्त्री पावे पराये उपकार करनेमें तत्पर रहे नम्र भी होवे ॥ ७ ॥

शतं जीविनो रन्ध्रगे राजपुत्रे भवन्तीह देशान्तरे विश्रुतास्ते ॥ निधानं नृपाद्विक्रयाद्वा लभन्ते युवत्युद्भवं क्रीडनं प्रीतिमन्तः ॥ ८ ॥

अर्थ-बुध अष्टम भावमें जिन मनुष्योंका होवे शतायु (दीर्घजीवी) होते हैं तथा अपने देशमें तथा परदेशोंमेंभी विख्यात होते हैं राजासे तथा व्यवहारसे धनसंचय करे और स्त्रीसंगका सुखमान भी एवं प्रगटभी बहुधा भोगते हैं परच्छिद्र ढूंढनेवाला सर्वदा रहे कफ तथा वायुरोगसे शरीर पीडित रहे कृश (माडा) हो कुरूप और कुलघाती होवे ॥ ८ ॥

बुधे धर्मगे धर्मशीलोऽतिधीमान् भवेद्दीक्षितः स्वर्धुनीस्नातको वा ॥ कुलोद्योतकृद्दानुवद्भूमिपालात्प्रतापाधिको बाधको दुर्मुखानाम्॥९॥

अर्थ-बुध नवम भावमें हो तो मनुष्य अतिशोभायुक्त यद्वा अतिधनवान् होवे धर्ममें स्वभाव रहे, बडा बुद्धिमान् होवे दीक्षित (गुरुमुखसे दीक्षा संस्कार पाकर उपासक) होवे यद्वा सोमयाजी होवे तथा गंगास्नानमें प्रेम रक्खे उसीका व्रतभी धारण करे अपने कुलमें सूर्य-

समान प्रकाश करे, राजकृपासेभी अधिक प्रताप बढे और दुर्जनोंका नाश (भंजन) करनेवाला होवे (प्र०) सत्य एवं सद्गुणोंसे युक्तरहे सबसे प्रीति रक्खे जितेन्द्रिय होवे साधुजनोंसे अनुराग करे कृषि-कर्ममें प्रधान हो चतुर वाचालभी होवे ॥ ९ ॥

मितः संवदेन्नोमितं संलभेत प्रसादादिवैकारि-सौराजवृत्ति ॥ बुधे कर्मगे पूजनीयो विशेषा-त्पितुः संपदो नीतिदण्डाधिकारात् ॥ १० ॥

अर्थ—जिसका बुध दशम स्थानमें हो वह मनुष्यपि-ताकी संपत्ति पावे विशेषतःसर्वलोकोंमें पूजनीय(मान्य) होवे नीतिविद्या जाने तथा दंडाधिकार(राजसंबंधी अधि कारी)होनेसे निग्रहानुग्रह(किसको दंड किसको धनादि देने) का सामर्थ्य होवे अच्छे राज्यमें राजव्यवहार-शील होवे और अतिवाचाल तो न होवे किंतु उसकी वाणी व्यर्थ न आवे, घोडे हाथीआदिराजसंपत्तिका भोगनेवाला होवे रूपवान् भाग्यवान् शीलवान् होवे

उत्तम वस्त्र भूषण वाहनादियोंसे परिपूर्ण रहे स्त्रियोंका प्यारा और विनीत (नम्र) भी होवे ॥ १० ॥

विनालाभभावस्थितं मेशजातं न लाभो न लावण्यमानृण्यमस्ति ॥ कुतःकन्यकोद्वाहदानं च देयं कथं भूसुरास्त्यक्ततृष्णा भवन्ति ॥११॥

अर्थ-जो लाभभाव (ग्यारहवें स्थानमें) बुध न हो तो धन कहाँसे आवे तथा सुंदरता कैसे होवे ऋण-रहित मनुष्य कैसे रहे और कन्याके विवाहमें देने योग्य (धनादियौतुक) दहेजकी सामग्री कहाँसे आवे बहुतसा ब्राह्मणोंको देने योग्य "जिस दानसे वह ब्राह्मण तृष्णारहित फिर मांगनेकी इच्छा न करे" कहाँसे आवे अर्थात् जिसके बुध लाभभावमें हो वह मनुष्य इतने कामोंमें समर्थ होता है. (प्र०) सुंदर दर्शनीय पंडित कवि रमणीय रोगरहित अभिमानी और राजकाज करनेमें चतुर होवे ॥ ११ ॥

न चेद्द्वादशो यस्य शीतांशुजातः कथं तद्गृहं

भूमिदेवा भजन्ति॥रणे वैरिणो भीतिमायान्ति कस्माद्धिरण्यादिकोशं शठःकोऽनुभूयात्॥१२

अर्थ—जिसके बारहवें भावमें बुध न हो तो उसके घरमें ब्राह्मण कैसे आवें संग्राममें शत्रु किससे डरें और कौनसा खल सुवर्ण आदि धनके खजानेको व्यय करे अर्थात् जिसका बुध बारहवाँ हो उसके घरमें ब्राह्मण आवें संग्राममें शत्रु भय माने दुष्टस्वभाव न होवे धनको उत्तम कार्योंमें व्यय करे. (प्र०) दरिद्री हो विषयासक्त रहे शत्रुसे जीता हुआ रहे अपने बंधुजनोंसे दबा रहे कुरूप तथा दुर्बुद्धि होवे ॥ १२ ॥

इति बुधभावफलानि

अथ गुरुभावफलानि

गुरुत्वं गुणैर्लग्नगे देवपूज्ये सुवेषी सुखी दिव्यदेहोऽल्पवीर्यः ॥ गतिर्भाविनी पारलौकी विचिन्त्या वसूति व्ययं संबलेन व्रजन्ति ॥ १ ॥

अर्थ–जिसके जन्ममें बृहस्पति लग्नका हो तो वह मनुष्य अच्छे आभूषणोंसे शोभायुक्त रहे शरीरकी कांति स्वच्छ होवे सुखी (विषादरहित) रहे वीर्य (बल) अल्प रहे तथा पंडित चतुर होवे लोगोंकी प्रसन्नतासे बडपन पावे शरीरके अंतमें उत्तमगति स्वर्ग वासादि पावे और धनादि उसके सुख भोगनेमें व्यय होवे.(प्र०) सर्वांग सुन्दर होवे, भाग्यशाली विषयभोग भोगनेवाला दयावान् गुणोंसे प्रख्यात रहे शत्रु जीते रहे सर्वदा प्रसन्न रहे बडी कीर्ति पावे ॥ १ ॥

कवित्वे मतिर्दण्डनेतृत्वशक्तिर्मुखे दोषदृक् शीघ्रभोगार्त्त एव ॥ कुटुम्बे गुरौ कष्टतो द्रव्य-लब्धिः सदा नो धनं विश्रमेद्यत्नतोऽपि ॥२॥

अर्थ–जिसका बृहस्पति कुटुंब (दूसरे) भावमें हो उसको कविता (काव्यादि रचनेकी) सामर्थ्य होवे राजकाज अदालत हाकमी करनेकी सामर्थ्य होवे वाचाल होवे परन्तु मुखमें कुछ रोग भी रहा करे

रतिक्रीडामें आसक्त (कामार्त) रहे अल्पवीर्य रहे धनकी प्राप्ति कष्टसे होवे प्रयत्न करनेपर भी धन संग्रह न रहे. (प्र०)धनवान् उदार तथा औरको सुख देनेवाला होवे एवं शत्रुका नाश करे और पराये दूषणोंकोभी मिटावे ॥२॥

भवेद्यस्य दुश्चिक्यगो देवमन्त्री लघूनां लघी-
यान् सुखं सोदराणाम्॥कृतघ्नो भवेन्मित्रसार्थे
न मैत्र्यं ललाटोदये व्यर्थलाभो न तद्वत् ॥३॥

अर्थ–जिसका बृहस्पति तीसरे भावमें हो वह शूद्रोंके बीच अतिशूद्र होवे भाइयोंका सुख बहुत रहे कृतघ्न भी होवे मित्रोंके साथ मित्रता न रहे भाग्योदय हुएमें भी मनोनुकूल धनलाभ न होवे जैसे भाग्योदय होनेसे राजसभा आदिमें प्रवेश तो होवे किंतु लाभ जैसा होना चाहिये तैसा न होवे. (प्र०) सुखी रहे बुद्धि-मान् होवे राजाका प्रिय होवे अतिथियोंका पूजन करे बंधुजनोंका माननीय होवे ॥ ३ ॥

गृहद्वारतःश्रूयते वाजिह्रेषा द्विजोच्चारितो वेद-घोषोऽपि तद्वत् ॥ प्रतिस्पर्धिनः कुर्वते पारि-चर्यं चतुर्थे गुरौ तप्तमन्तर्गतं च ॥ ४ ॥

अर्थ—जिसके बृहस्पति चतुर्थ भावमें हो तो मनुष्यके दरवाजेपर घोडेकी हेषा खनखनाहट नित्य सुना जावे तथा वेदध्वनि (ब्राह्मणोंके मुखोंसे आशीर्वादार्थ वेदमंत्रोंकी ध्वनी) सुनाई देती रहे और उसके शत्रुभी दासवत् सेवा करें तोभी उसका मन संतप्त (सोद्वेग) रहे (प०) वाहन घोडा आदि तथा गौ महिषी आदि पशु बहुत हों सुखी रहे ॥ ४ ॥

विलासे मतिर्बुद्धिगे देवपूज्ये भवेज्जल्पकः कल्पको लेखको वा ॥ निदाने सुते विद्यमानेऽपि भूतिः फलोपद्रवः पक्वकाले फलस्य ॥ ५ ॥

अर्थ—जिसके बृहस्पति लग्नसे पञ्चम भावमें हो वह मनुष्य भोगविलाश बुद्धि विशेष रक्खे बहुत बोलनेवाला होवे कल्पक (न्यायशास्त्र)जाननेवाला यद्वा तर्क

ऊहापोह करनेवाला) होवे लिखनेमें चतुर तथा दिव्य अक्षर लिखनेवाला होवे परंतु जो कुछ कार्य करे उसके फल मिलते समय विघ्न होवे पुत्र सहायक होनेसेभी धन समृद्धि परिणत होवे अर्थात् कार्यानुसारही होवें अधिक न होवे,संतान बडी तथा बहुत हों गुणोंकरके विख्यात रहे बुद्धि निर्मल हो प्रियवाणी बोले, ब्राह्मणोंको पूजनेवाला होवे ॥ ५ ॥

रुगार्तो जनन्यां रुजः संभवेयू रिपौ वाक्पतौ शत्रुहन्तृत्वमेति ॥ बलादुद्धतः को रणे तस्य जेता महिष्यादिशर्मा न तन्मातुलानाम् ॥६॥

अर्थ–बृहस्पति छठे भावमें हो तो मनुष्य रोगसे पीडित हुआभी शत्रुओंके मारनेकी सामर्थ्य रक्खे अपने बलसे संग्राममें उद्धत रहे अर्थात् इसे कोई न जीत सके तथा भैंस आदि पशुओंसे सुख मिले मामाके पक्षसे न मिले यद्वा माता रोगी रहे शत्रु बहुत रहें रोगी भी रहे

परदेशवासी होवे पराई सेवा करे कृतघ्न (निंदक) होवे मूर्खबुद्धि भी होवे ॥ ६ ॥

**मतिस्तस्य बह्वी विभूतिश्च बह्वी रतिर्वै भवे-
द्भामिनीनाम बह्वी ॥ गुरुर्वंगकृद्यस्य जामित्र-
भावे सपिण्डाधिकोऽखण्डकंदर्प एव ॥ ७ ॥**

अर्थ—जिसका बृहस्पति सप्तम भावमें हो उसकी बुद्धि बहुत बडी)विचारशील चतुर होवे धनकी समृद्धि भी बहुत होवे परञ्च स्त्रीसंग थोडा होवे गर्वी (घमंड-खोर) होवे अपने कुलके लोगोंमेंसे बलवान् होवे स्वरूपवान् (कामदेवके समान रूपवान्) होके कामातुर रहे पापरहित एवं सच्चा बोलनेवाला और देवता गुरुकी भक्तिमें तत्पर रहे ॥ ७ ॥

**चिरं नो वसेत्पैतृके चैव गेहे चिरस्थायिनी-
तद्गृहं तस्य देहम् ॥ चिरं नो भवेत्तस्य नीरो-
गमंगं गुरुर्मृत्युगो यस्य वैकुण्ठगन्ता ॥ ८ ॥**

अर्थ—जिसका बृहस्पति अष्टम स्थानमें हो वह

८-आठका अर्थ-त्याग, प्रेतलोक जीव जगत् से
गमन। पृथक् होना, क्षति, पतना-
राहु वस्था भंगावस्था। निष्कोषण पृथक्
त्यागयादेहत्याग करण। संघर्ष की परिणामावस्था।
इत्यादि।

९-नव का अर्थ-मुक्ति, रोगमुक्ति, नवजीवन, आ-
केतु ध्यात्मिक अवस्था पुनर्जन्म का पूर्व
नवजीवन। संवाद, यात्रा इत्यादि।

पूर्वोक्त नवसंख्या का अपूर्व समावेश।

१+९=१०। २+८=१०। ३+७=१०। ४+६=१०। शेष रहे ५ यह पूर्ण इकाई है, नित्य वस्तु है, आकाशतत्व का अधिपति है। ५ की संख्या अतिपवित्र है। ५ की महिमा अतुलनीय है इसका विशेष विवरण हमारी बनाई पुस्तक 'उत्कल के पञ्चतीर्थ के २१८ से २२३ पृष्ठ तक में देखिये।

और देखिये १ से ९ पर्यन्त योग करने से

(प्र०) धर्मात्मा सत्यवादी दयावान् धनवान् इष्ट-बंधुजनसंयुक्त बडा प्रतापी होवे ॥ ९ ॥

ध्वजा मण्डपे मण्डलं चित्रशालं पितुःपूर्वजेभ्योऽपि तेजोधिकत्वात्॥न तुष्टो भवेच्छर्मणा पुत्रकाणांपचेत्प्रत्यहं प्रस्थसामुद्रमन्नम् ॥ १० ॥

अर्थ—जिसका बृहस्पति दशम भावमें हो उसको कचहरी घर ध्वजा पताकाओंसे सुशोभित तथा अनेक चित्र (शिल्प रंगादिकों) से सजा रहे स्त्री पुत्रादियोंके गृहभी चित्र विचित्र होवें तेजवान् अपनेभी अधिक होवे परंच पुत्रोंके सुखसे संतुष्ट न होवे अर्थात् सुतद्वेषी रहे और इसके रसोईमें १प्रस्थ सोलह पल लवण व्यय होवे अर्थात् इतना अन्न रसोईमें लोग भोजन करें कि जिसमें १पाथा निमक लगता हो. (प्र०)सत्कर्मी राजप्रिय सर्वमान्य सामर्थ्यवान् अधिकार देवताब्राह्मणोंका भक्त तृप्त(इच्छारहित अर्थात् संतुष्ट)होवे॥ १०॥

अकुप्यं च लाभे गुरौ किन्न लभ्यं वदन्त्यष्ट

वर्णसंख्या और लिङ्गज्ञापक तालिका ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	०	०	०	०	स्वर
य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	
पुं०	स्त्री.	पुं०	स्त्री.	पुं०	स्त्री.	पुं०	स्त्री.	पुं०	पुं०

किस वर्ण की क्या संख्या वा मूल्य और कौन लिंग है यह स्पष्ट होगया, १, ३, ५, ७, ९, १०, कोष्ठस्थ सर्व वर्ण पुल्लिंग हैं और २, ४, ६, ८, कोष्ठस्थ सब वर्ण स्त्री वर्ण हैं ? स्वर वर्ण चैतन्य स्वरूप और पुं वर्ण में गिने गये हैं ।

जो लोग ज्योतिष शास्त्र जानते हैं वे जानते

होवे अर्थात् अपयश मिले मति इसकी औरोंको ठगनेवाली होवे और काम ऐसा करे कि जिससे व्यर्थ द्रव्यहानि हो जावे इहलोक परलोकमें कहीं भी काम न आवे यश, मति, विधि ये तीनों इसके विरुद्ध होते हैं. (१०) बहुतोंका द्वेषी होवे पराये धनमें अतिलोभ रक्खे ईर्ष्या (हिंसा) करे. पापी मनुष्योंकी संगति करे शरीर मांदा रहे कृतघ्न और ठग होवे ॥ १२ ॥

इति बृहस्पतिभावफलानि

अथ शुक्रभावफलानि

समीचीनमङ्गे समीचीनसङ्गःसमीचीनबह्वङ्गनाभोगयुक्तः ॥ समीचीनकर्मा समीचीनशर्मा समीचीनशुक्रो यदा लग्नवर्ती ॥ १ ॥

अर्थ–जिसका शुक्र षडबलयुक्त लग्नमें हो तो उसके प्रत्येक अंग सुंदर होते हैं सत्संगी रहता है सुंदर अंग प्रत्यंग सौंदर्य चातुर्यादि जिनकी ऐसी स्त्रियोंका भोग करता है कार्य भी यज्ञदानादि अच्छे अच्छे करता है

सुखभी अच्छा भोगता है विषयभोगादि समस्त उत्तम प्रकारसे भोगता है शरीर सुरूप हो शास्त्राभ्यासी विख्यात होवे प्रिय वाणी बोले समस्त कला (इल्म) जाननेवाला नम्र होवे शत्रु उसके न होवें ॥ १ ॥

मुखं चारुभाषं मनीषापि चार्वी मुखं चारु चारूणि वासांसि तस्य ॥ कुटुम्बस्थितः पूर्वदेवस्य पूज्यः कुटुम्बेन किंचारुचार्वङ्गिकामः२॥

अर्थ–जिसका शुक्र धनभावमें हो उसका मुख सुरूपवान् होता है बुद्धि चतुर (धर्मिष्ठा) होती है वाणी रमणीय बोलता है अनेक प्रकारके रमणीय वस्त्र पहनता है कुटुंबभी उसका सरल (सुलक्षण)होकर इसे सुख देवे सुंदर रमणियोंकी अभिलाषारक्खे(प्र०)धन अनेक प्रकारके जमा होवे सज्जन संगति करे सोना, मोती, मणि वस्त्रादि लाभ होवे नीरोग रहे चेष्टा अच्छी होवे ॥ २ ॥

रतिःस्त्रीजने तस्य नो बन्धुनाशो गुरुर्यस्य दुश्चिक्यगो दानवानाम् ॥ न पूर्णो भवेत्पुत्रसौ-

है (बचपन में मणिराम नामथा १६ वर्षका होनेपर मणिशंकर नाम रुचिकर समझ कर अपने आप लिखने लगा है अ० कु०) पूर्वकाल में शिशु उत्पन्न होने के पश्चात् यथा समय पण्डित और ज्योतिर्विद् द्वारा जात शिशुका नामकरण होताथा आज कल वह प्रथा प्रायः उठ गई है । अथवा कहीं कहीं नाम मात्र है, वृन्दावन (गोकुल) के नन्दभवन में गर्ग ऋषि ने श्रीकृष्ण का नामकरण किया था।

अक्षर या वर्ण एवं अंक या संख्या में ईश्वर में का समस्त शुभाशुभ गुण एवं शक्ति निहित है। (स्थापित है)। प्राचीन रोमदेशीय ग्रन्थावली में देखा जाता है कि वे ९ प्रधान देवताओं का अस्तित्व स्वीकार और पूजा करते थे । हमारे प्राचीन आर्यगण जिस प्रकार जल हाथ में लेकर किसी विषय की शपथ (संकल्प) एवं प्रतिज्ञा करते हैं, इसी प्रकार रोम देश में प्राचीन काल में ९ देवताओं के नाम लेकर शपथ और प्रतिज्ञा करते थे नीचे लिखी कविता से यह समझ लीजिये।

Lars Porsena of olosium
By the Nine gods he swore
That the great house of Tarquin
Should suffer wrong no more.

Lays of Ancient Rome.

विष्णुपुराण के मत से— १ भृगु, २ पुलस्त्य, ३ पुलह, ४ क्रतु, ५ अंगिरा, ६ मरीचि, ७ दक्ष, ८ अत्रि, ९ वशिष्ठ। ब्रह्मा के आत्मसदृश ये ही ९ मानसपुत्र पुराण में ब्रह्मा के नाम से विदित हैं।

अथान्यान् मानसान् पुत्रान् सदृशानात्मनोऽसृजत्
भृगुं पुलस्त्यं पुलहं क्रतुमंगिरसं तथा ॥
मरीचिं दक्षमत्रिंश्च वशिष्ठंचैव मानसम् ।
नव ब्रह्माण इत्येते पुराणे निश्चयं गताः। विष्णु:१।१

सृष्टिकर्त्ता प्रजापति ब्रह्मा के संकल्प से उत्पन्न ९ पुत्र ब्रह्मा नाम से विदित हैं। कारण कि येही सृष्टि कार्य में व्यापृत हुए हैं। यही ९ ऋषि ब्रह्मा के मानसपुत्र वा ऋषि वा ग्रह हैं। विचारशील, धीशक्तिसम्पन्न महानुभाव स्थिरता पूर्वक विचार करके जान सकते हैं कि ग्रह नक्षत्रगण ही जगत्

चोत्तमौ तौ भवेताम् ॥ विपद्येत संपादितं चापि कृत्यं तपेन्मंत्रतःपूज्यसौख्यं न धत्ते॥६॥

अर्थ–शुक्र छठे भावमें हो तो मनुष्य अमृतसेवित देवताओंके समान शत्रु संग्राममें दृढ (अनिवारित) होवे धन नाशभी उत्तम कार्यमें करे जास्त गुण क्रिया करके श्रेष्ठ रहे किंतु जो कार्य करे वह सफल न होवे कुमंत्र (दुष्टप्रयोग) बुद्धिसे संताप पावे गुरुजन) आदि पूज्यजनोंसे सुख पावे अथवा गुरुजन इसमे सुख न पावें (प्र०) कुरूप संतानहीन हीनबुद्धि अल्पायु छोटी समझ पवित्रतारहित रहे ॥ ६ ॥

कलत्रे कलत्रात्सुखं नो कलत्रात्कमलत्रं तु शुक्रे भवेद्रत्नगर्भम् ॥ विलासाधिको गण्यते च प्रवासी प्रयासाल्पकःकेन मुह्यन्ति तस्मात्॥७॥

अर्थ–जिसका शुक्र सप्तम भावमें हो उसके स्त्रीसुख तो होवे किंतु (कलत्रं श्रोणिभार्ययोः) कटि स्थानसे

पीडित रहे अर्थात् कमरमें रोग रहा करे उसकी स्त्री रत्नगर्भा (सत्पुत्र पैदा करनेवाली) होवे तथा अतिकामी एवं नित्य प्रवासी रहे स्वल्पोद्यमी (आलसी) होवे श्रम विशेष न करे और चतुर ऐसा होवे कि जिसकी चातुर्यतासे सभी मोहित रहें. (प्र०) रूपवान् गुणोंसे विख्यात होवे सुलक्षण स्त्री मिले सच्च बोले दयावान् होवे सज्जनोंके बीच प्रशंसनीय होवे ॥ ७ ॥

जनः क्षुद्रवादी चिरं चारु जीवेच्चतुष्पात्सुखं
दैत्यपूज्यो ददाति ॥ जनुष्यष्टमे कष्टसाध्यो
जयार्थःपुनर्वर्द्धते दीयमानं धनर्णम् ॥ ८ ॥

अर्थ—जिसके जन्मसमयमें शुक्र अष्टम भावमें हो उसको पशु(गौ घोडा आदियों)का सुख देवे तथा वह मनुष्य क्षुद्र (चुगलखोर) होवे सुखपूर्वक बहुत काल पर्यंत जीता रहता है ऋण लेनेसे पुनःदेकरकेभी वारंवार ऋणीही रहता है.(प्र०) अल्पसत्व हीनपराक्रमी विदेश

वासी दुर्व्यसनी अल्पायु बन्धुरहित शत्रुसहित और देवता गुरुके विषयमें श्रद्धा न रक्खे ॥ ८ ॥

भृगौ त्रित्रिकोणे पुरे केन पौराः कुसीदेन ये वृद्धिमस्मै ददीरन्॥गृहे ज्ञायते तस्य धर्मध्वजादेः सहोत्थादिसौख्यं शरीरे सुखं च ॥९॥

अर्थ—जिसके नवम भावमें शुक्र हो उसको नगरनिवासी सभी मनुष्य वृद्धि (व्याज)देतेहैं कोईभी इसके ऋणसे खाली नहीं रहताहै तथा उसका घर धर्मध्वजा सदावर्त आदि दानोंसे सभीके पैछानेमें आता है भाई तथा नौकर दासोंसे सुख पाताहै अतिऐश्वर्यवान् बहुत लाभवान् अभिमानी विख्यातकीर्ति होवे शत्रुभी हाथ बाँधे खडा रहे ॥ ९ ॥

भृगुः कर्मगो गोत्रवीर्यं रुणद्धि क्षयार्थं भ्रमः किन्न आत्मीय एव॥तुलामानतो हाटकं विप्रवृत्त्या जनाडम्बरैःप्रत्यहं वा विवादात् ॥१०॥

अर्थ—शुक्र दशम भावमें हो तो इतनी संतान होती है कि उनके इकट्ठे देखनेमें यह मेरा पुत्र है वा किसी

औरका ऐसा भ्रम हो जावे अर्थात् बहुपुत्र संतानरूप
वन जैसा हो जावे धनहानिके विषयमें भ्रम रहे अर्थात्
धनक्षय न होने देवे प्रत्युत ब्रह्मवृत्तिसे अथवा विवाद-
कर्मसे नित्यसुवर्णतुला (सौ पल स्वर्ण) वा इससेभी
अधिक विशेषतः लोगोंको आडंबर दिखानेके लिये
अपने पास रक्खे जिस वृत्तिसे पिताका आजीवन
हुआ उससे अतिरिक्त अधिक कर्मोंसे धनवान् तथा
ऐश्वर्यवान् होवे धन धर्मयुक्त सुशील पुत्रवान् सुरूप
सर्वसिद्धिवाला होवे ॥ १० ॥

भृगुर्लाभगो लाभदो यस्य लग्नात्सुरूपं
महीपं च कुर्याच्च सम्यक् ॥ लसत्कीर्तिस-
त्यानुरागं गुणाढ्यं महाभोगमैश्वर्ययुक्तं
सुशीलम् ॥ ११ ॥

अर्थ–जिसका शुक्र ग्यारहवें भावमें हो तो गुणवान्
(सुगुणशाली) अच्छे स्वभावयुक्त देदीप्यमान कीर्ति-
वाला सच बोलनेवाला बडा ऐश्वर्यवान् स्वरूपवान्

अनेक भोगभोगनेवाला सर्वसामर्थ्ययुक्त राजा वा राजतुल्य करता है जैसा अधिक बली शुक्र हो वैसेही उक्त फलोंमेंसे अधिक फल देता है (प्र०) दीर्घायु उदार राजमान्य प्रसिद्ध हकूमतीहोवे और कन्या बहुत होवें ॥ ११ ॥

कदा व्येति वित्तं विलीयेत पित्तं सितो द्वादशे केलिसत्कर्मशर्मा ॥ गुणानां च कीर्तिक्षयं मित्रवैरं जनानां विरोधं सदाऽसौ करोति ॥ १२ ॥

अर्थ—शुक्र बारहवें भावमें हो तो क्रीडा (कौतुकादि) यद्वा धर्मकर्मादिसे धनव्ययसे सौख्य माने गुण और कीर्ति क्षय होवे सर्व मनुष्योंमे विरोध करे मित्रोंसे वैरभाव रक्खे धन कभी कभी पावे तोभी व्ययाधिक्यसे धननाश होता ही रहे और शरीर पित्त धातु क्षीण होकर कफरोगकी वृद्धि होवे. (प्र०) धन व्यर्थभी खर्च करे पराक्रम न करसके शरीरमें बलभी

संकल्प से उत्पन्न होकर सृष्टि कार्य में लगी हुए हैं। इसी कारण विष्णु पुराण में अद्वितीय ज्योतिष शास्त्रवित् महर्षि पराशर ने कहा है कि ब्रह्मा के मानस जात पूर्वोक्त ६ जन ऋषि ही पुराणों में ब्रह्मा नाम से वर्णित हैं।

अब प्रश्न होसकता है कि उन सब के नाम ऋषि कैसे हुए। ऋष् धातु का अर्थ गति है गति के तीन अर्थ हैं ज्ञान, गमन, और प्राप्ति। उन सब (पदार्थों) में ज्ञान, गमन, और प्राप्ति (ग्रहण और धारण करने की शक्ति) होने से इन का नाम ऋषि हुआ। यह सब नाम करण मनुष्य की ज्ञान वृद्धि के साथ साथ हुआ है, तथा उक्त नामों के मनुष्याकार ऋषि भी थे, जैसा कि आज कल भी राम, कृष्ण, नारायणादि मनुष्यों में नाम पाये जाते हैं। अनेक लोग उक्त नाम के मनुष्य ऋषियों और सृष्टि कर्ता ब्रह्मा के मानस जात ऋषिगणों को एक ही मान रहे हैं वा मान लेते हैं परन्तु हस्तपद युक्त सूर्यवंश के कुलगुरु वसिष्ठ

सुखापेक्षया वार्जितोऽसौ कुटुम्बात्कुटुम्बे शनौ वस्तु किं किन्न भुंक्ते॥समं वक्ति मित्रेण तिक्तं वचोऽपि प्रसक्तिं विना लोहकंको लभेत॥२॥

अर्थ–जिसका शनि दूसरे भावमें हो वह मनुष्य सुखके वास्ते कुटुंब छोड़े परंतु सुख न होवे प्रत्युत कुटुंबके त्यागनेसे परदेश वास करे भोगपदार्थ तो सर्वप्रकारके भोगे और बनाये हुए लोहेके औजार आदि वा अष्टधातु लोहा आदि विना खुशामदही बहुत पावे मित्रके साथ कडवी वाणी (जो सहारी न जावे) बोलता है धनरहित अनेक व्यसनोंसे युक्त कृश कुरूप और बहुत शत्रुवाला होवे ॥ २ ॥

तृतीये शनौ शीतलं नैव चित्तं जनादुद्यमा-ज्जायते युक्तभाषी ॥ अविघ्नं भवेत् कर्हि-चिन्नैव भाग्यं दृढाशःसुखी दुर्मुखः सत्कृ-तोऽपि ॥ ३ ॥

अर्थ–जिसका शनि तीसरे भावमें हो उसका सहज

(भाई) आदियोंसे तथा पराक्रम करनेसेभी शांत न हो ऐश्वर्य और लाभ निर्विघ्नपूर्वक न होवे होवे तो सही किंच इनमें विघ्न बहुत होते रहें थोडा बोलनेवाला होवे तृष्णा उसकी चलायमान न होवे नित्य बनीही रहे इस कारण सुखी कभी न रहे जो इसका सत्कार (आदरभाव) भी किया जाय तोभी दुष्टता न छोडे दुष्ट वाणीही मुखसे निकाले. (४०) दीर्घायु होवे संपूर्ण विद्या जाने प्रसन्न रहे सर्व सामर्थ्य होवे धन-वान् निरोगी और सुंदर शरीरवाला होवे ॥ ३ ॥

चतुर्थे शनौ पैतृकं याति दूरं धनं मन्दिरं ब-न्धुवर्गापवादः ॥ पितुश्चापि मातुश्च संता-पकारी गृहे वाहने हानपो वातरोगी ॥ ४ ॥

अर्थ—जिसका शनि चौथे भावमें हो उसको पिताका धन गृहादिक न मिले मिलेभीतो उनसे दूर रहे बिरादरीसे कलंक (निंदा) पावे घरके तथा वाहनके विषयमें हानि होवे अपने माता पिताके संताप (क्लेश) करे वातरोगी

होवे (प्र०) सुखरहित परदेश वासी पराया सेवक हीन दीन तथा बंधुरहित रहे ॥ ४ ॥

शनौ पञ्चमे च प्रजाहेतुदुःखी विभूतिश्चला तस्य बुद्धिर्न शुद्धा ॥ रतिर्दैवते शब्दशास्त्रे न तद्वत्कलिर्मित्रतो मन्त्रतःक्रोधपीडा ॥ ५ ॥

अर्थ—जिसका शनि पञ्चम भावमें हो वह संतानके निमित्त नित्य दुःखी रहता है ऐश्वर्यभी कभी कभी घटता बढ़ता रहे बुद्धि शुद्ध निष्कपट न होवे होवे तो कुटिलता करता रहे देवतामें तथा धर्मशास्त्र(वेदस्मृति) आदियोंमें प्रेम एवं विश्वास जैसा चाहिये वैसा न रक्खे मित्रके साथ कलह करता रहे अपनी बुद्धिके चूकसे कुक्षि (कूख) में रोग रहे और मंत्र विषयमें सिद्धि कम होवे, (प्र०) मित्र दुष्ट होवे यहभी मित्रके साथ दुष्टता करे धन रहित प्रतापरहित सुखवर्जित होवे ॥ ५ ॥

अरेर्भूपतेश्चोरतो भीतयः किं यदीनस्य पुत्रो भवेद्यस्य शत्रौ ॥ युद्धे न भवेत्सन्मुखे

तस्य योद्धा महिष्यादिके मातुलानां विनाशः ॥ ६ ॥

अर्थ–जिसका शनिछठे भावमें हो उसको राज तथा चोरसे भय न होवे बलवान् रहे संग्रामं योद्धा (भट) तथा विवादमें प्रतिवादी (लड़नेवाला इसके सन्मुख न ठहर सके इतना बलवान् होवे कि संग्राममें किसीसे न हारे गौ महिषी आदि पशुओं सुख फायदा मिले और मामाकी हानि होवे (प्र० शत्रु न होवे जो कोई शत्रुता इससे करेभी तो आपही नष्ट होजावे राजासे अपकार्य सिद्ध होवे भोजन वस्त्रादी अच्छे मिले अपने धर्ममें तत्पर रहे सद्बुधि होवे॥६॥

सुदाराश्च मित्रं चिरं चारु वित्तं शनौ द्यूनगे दम्पती रोगयुक्तौ ॥ अनुत्साहसंततक्रुद्धीन-चेताःकुतो वीर्यवान् विह्वलो लोलुपःस्यात् ७॥

अर्थ–शनि सप्तम भावमें हो तो स्त्री सुंदर मिले हितकारी न होवे धन न्यायमें न आवे बहुत कालपर्यंत

इतने वस्तुका सुख न मिले दोनों स्त्री पुरुष रोगयुक्त रहें निरंतर अनुत्साही आलसी होवें मन मलीन विह्वल रहें लोलुप (अतिलोभी) गर्हित वस्तुपरभी बड़ा लोभ करनेवाला होवे बलवान् न होवे दुष्ट स्त्रीमें आसक्त रहे बुद्धि चतुर होवे पापमें मति रक्खे उद्धत होवे सज्जन संगति तथा शास्त्रज्ञानसे रहित रहे ॥७॥

वियोगो जनानां त्वनौपाधिकानां विनाशो धनानां सकोपस्य न स्यात्॥शनौ रन्ध्रगे व्याधितं क्षुद्रदर्शी तदग्रे जनः कैतवं किं करोतु॥८॥

अर्थ—शनि अष्टम भावमें हो तो उपाधि रहित अर्थात् सत्संगी ज्ञानी मनुष्योंका वियोग होवे अर्थात् सत्संग न मिले दुष्ट संगतिमें रहें अपने मनुष्योंका वियोग पावे अष्टम शनिवाला ऐसा कौन मनुष्य है जिसके धनोंका नाश न होवे तैसा रोगीभी रहे पराये दोष (छिद्रोंको) ढूंढता रहे और उसके आगे कोई धूर्तपन(ठगपनी)क्या करेगा अर्थात् महाधूर्त (ठग) आपही होवे. (प०) मंदबुद्धि

प्रभावरहित रुधिरविकारसे शरीर पीडित बुद्धिहीन होवे और परायेमें भर्त्सना पावे ॥ ८ ॥

मतिस्तस्य तिक्ता न तिक्तं तु शीलं रतिर्योग-
शास्त्रे गुणो राजसः स्यात्॥सुहृद्वर्गतो दुःखितो
दीनबुद्ध्या शनिर्धर्मगःकर्मकृत्संन्यसेद्वा ॥९॥

अर्थ—जिसका शनि नवम भावमें हो तो उसकी बुद्धि विषयवासनासे विरक्त रहे परंच शील (स्वभावचरण) उसका कटुक (बुरा) न होवे योगशास्त्रमें अभ्यास प्रेम रहे रजोगुण विशेष रहे मित्र बांधवोंसे दुःखित रहे अर्थात् दयावान् होनेसे औरोंके दुःखदेख खिन्न रहे सभीका शुभ चाहे अथवा यती (संन्यासी) ही हो जावे. (प्र)०धर्म कर्म त्यागे सभी मनुष्योंसे विरुद्ध रहे इर्षा (मत्सर) रक्खे बुद्धिहीन अतिक्रोधी सुखरहित होवे ॥ ९ ॥

अजा तस्य माता पिता वाहुरेव वृथा सर्वतो
दुष्टकर्माधिपत्यात् शनैरेधते कर्मगः शर्म
मन्दो जयो विग्रहे जीविकानां तु यस्य ॥१०॥

अर्थ—जिसका शनि दशम स्थानमें हो वह माताके अभाव वा क्लेशसे बकरी आदि पशुके दूधसे पले तथा बाल अवस्थाहीमें पिताका अभाव होनेसे केवल अपनेहीबाहु-बलसे धन कमावे कुछ अधिकार मिलनेसे निष्प्रयोजन भी सर्व जनोंको ताडनादि (मारपीट) करके क्रमसे लड़नेमें जीत पावे तदनंतर सुख भी पावे आजीवनवृत्तिभीस्वल्प-तर होवे. (प्र० सत्कर्मी होवे स्त्री सुलक्षणी होवे चित्त स्थिर रहे नम्र तथा राजपूज्य प्रतापी होवे ॥ १० ॥

शनौ व्योमगे विन्दते किंच माता सुखं शैशवं दृश्यते किंतु पित्रा ॥ निधिः स्थापितो वा पिता वा कृषिश्च प्रणश्येद्ध्रुवं दृश्यते दैवतो वा ॥११॥

अर्थ—दशम शनिका फल प्रकारांतरसेभी कहते हैं कि दशम शनिवाला क्या माताका सुख पाता है. क्या उसका पिता उसकी बाललीला देखता है. कभी नहीं और पिताकी धरी धराई निधि (उत्तम धन रत्नादि)

तथा कृषि (खेती) आदि स्वचक्र परचक्रागम जलाग्न्यादि भयोंसे नष्ट होते हैं ॥ ११ ॥

स्थिरं वित्तमायुः स्थिरं मानसं च स्थिरा नैव रोगादयो न स्थिराणि ॥ अपत्यानि शूरः शतादेक एव प्रपंचाधिको लाभगे भानुपुत्रे ॥१२॥

अर्थ–शनि ग्यारहवें भावमें हो तो धन स्थिर रहे आयु बहुत हो बुद्धिभी स्थिर होवे शरीरके रोगादि स्थिर न रहें, निरोगी रहे संतान स्थिर न रहे अर्थात् संततिका शोक देखे सौ मनुष्योंमेंसे छूटा हुआ हो प्रपंची(जाली) होवे रागद्वेषादियोंमें निपुण होवे.शूर होवे.(५०) अनेक प्रकारके लाभ विना लोभ किये भी होते रहें शास्त्रमें अनुराग रक्खे शत्रु जीते रहे सज्जनोंका प्रशंसनीय होवे ॥ १२

व्ययस्थे यदा सूर्यसूनौ नरः स्यादशूरोऽथवा निस्त्रपो मन्दनेत्रः॥प्रसन्नो बहिर्नो गृहे लग्नपश्च व्ययस्थो रिपुध्वंसकृद्यज्ञभोक्ता ॥ १२ ॥

अर्थ–जो शनि बारहवें भावमें हो तो वह मनुष्य

कातर (कायर) होवे भययुक्त रहे निर्लज्ज (बेहया) भी होवे नेत्रोंकी दृष्टि कम रहे परदेशमें प्रशन्न रहे घरमें सुख न रहे यदि वह शनि लग्नेशभी होवे तो शत्रु-नाश करे तथा यश द्रव्यसे समृद्धि एवं ऐश्वर्य पावे केशहीन खल्वाट होवे बुरे कामोंमें धनव्यय करे पापमें तत्पर रहे कुमित्र मिले दीन (कंगाल) रहे शरीर पीडित रहे सज्जनोंसे रहित और कलही होवे ।१२

इति शनिभावफलानि

अथ राहुभावफलानि ।

स्ववाक्ये समर्थः परेषां प्रतापात्प्रभावात्स-माच्छादयेत्स्वान् परार्थान् ॥ तमो यस्य लग्ने स भग्नारिवीर्यः कलत्रे धृतिं भूरिदाशे-ऽपि यायात् ॥ १ ॥

अर्थ–जिसका राहु लग्नमें हो वह शत्रुओंको सर्वदा जीत रक्खे और अपने वचनके प्रतिपालन करनेको दूसरेके प्रतापसे समर्थ होवे न कि अपने तेजसे दूसरेके

प्रभावसे अपने तथा पराये कार्योंका साधन करे और बहुत स्त्रियोंके होते ही संतोष न रक्खे अति कामीभी होकर बहुत स्त्रियोंका धर्षण करे (प्र०) दुष्टस्वभाव (खल) धूर्त्त तथा सर्वसाधारणोंको ठगनेवाला होवे शिरमें व्यथा (रोग) रहे क्रीडारसमें मग्न रहे रोगी होवे विवादमें जय पावे ॥ १ ॥

कुटुम्बे तमो नष्टभूतं कुटुम्बं मृषाभाषिता निर्भयो वित्तपालः॥स्ववर्गप्रणाशो भयं शस्त्रतश्चेद्वश्यं खलेभ्यो लभेत्पारवश्यम् ॥ २ ॥

अर्थ—जिसका राहु दूसरे भावमें हो उसका कुटुंब नष्टके बराबर रहे अर्थात् उसके स्वजन दुष्ट होकर पराधीन वा बिके हुएके तुल्य जैसे रहे शस्त्रसे भय होवे झूंठ बोले निर्भय रहे किसीसे न डरे धनकी इच्छा करे अर्थात् कृपण होवे बंधुजन नष्ट होवें मुखर(बहुत वाचाल)धूर्त्त कलही धननाश करके दरिद्री रहे और सर्वदा भ्रमणमें तत्पर रहे ॥ २ ॥

न नागोऽथ सिंहो भुजो विक्रमेण प्रयातीह सिंहीसुते तत्समत्वम् ॥ तृतीये जगत्सोदरत्वं समेति प्रयातोऽपि भाग्यं कुतो यत्नहेतुः ॥३॥

अर्थ–जिसका राहु तीसरे भावमें हो तो उसका बाहु बल बहुत बडा होवे परंतु हाथी सिंहके समान तो न होवे सारे संसार उसके भाइयोंके समान रहे तथा भाग्य(ऐश्वर्य)पायेमेंभी बडे यत्नसे लाभादि होवें(प्र०) शत्रु इससे हारते रहें संसारमें यश बढे धनवान् होवे गया धनभी पावे हासविलासादि सुखमें रहे भाईकी हानि पशुहानि दरिद्रता होवे ॥ ३ ॥

चतुर्थे कथं भ्रातृनैरुज्यदेहो हृदि ज्वालया शीतलं किं बहिः स्यात्॥ स चेदन्यथा मेषगः कर्कगो वा बुधर्क्षेसुरो भूपतेर्बन्धुरेव ॥ ४ ॥

अर्थ–राहु चौथे भावमें हो तो भ्राताका देह निरोगी न रहे आपभी रोगयुक्त रहे हृदयमें रोगादि चिंताकी ज्वाला लगी रहे कभी शरीरशीतल न होवे यदि चौथा राहु मेष १ कर्क ४ कन्या ६ मिथुन ३ राशियोंमेंसे

किसीमें हो तो समस्त शुभफल ही करे.(प्र०सुखहानि अपने मित्र पुत्रादिभी दुःख देवे चित्तमें भ्रम रहे ४॥

सुतेतत्सुतोत्पत्तिकृतिं सहि कायाःसुतो भामि-
नीचिन्तया चित्ततापः ॥ सति क्रोडरोगे कि-
माहारहेतुःप्रपंचेन किं पापकादृष्टवर्ज्यम् ॥५॥

अर्थ–जिसका राहु पंचम भावमें हो तो पुत्रकीउत्पत्ति करे स्त्री क्रोधी(कर्कशा)होनेसे चित्त संतप्त रहे कुक्षीमें रोग रहे पेटमें अग्नि मंद रहे इससे औषधी पथ्य आदिकोंकी आदत रहे अकस्मात् दैवयोगसे धनादि न मिले प्रयास (प्रयत्न) करनेसेभी लाभादि अल्पही होवे.(प्र० बुद्धिमें भ्रम रहे संतान हानि होवे विद्या थोडी आवे भाइयोंको क्लेश होवे शत्रुकी भय रहे॥ ५॥

बलं बुद्धिवीर्यं धनं तद्दर्शनस्थितो वैरिभावेऽपि
येषां जनानाम् ॥ रिपूणामरण्यं दहेदेव राहुः
स्थिरं मानसं तत्तुला नो पृथिव्याम् ॥ ६ ॥

अर्थ–जिसका राहु छठे भावमें हो उसके शत्रुरूपी

वन भस्म हो जावे तथा इसीके वशसे शरीरमें बल बुद्धिकी चातुर्यता बहुत होवे धनभी बहुत होवे परन्तु मन स्थिर न रहे इतने फलोंमें उसकी तुल्यता संसारमें कोई न कर सके (प्र०) शत्रुक्षय होवे मित्रोंका संगम होता रहे पशुहानि होवे कमरमें पीडा रहे म्लेच्छ जनोंकी संगति रहे बलवान् होवे ॥ ६ ॥

विनाशं लभेयुर्धुने तद्युवत्यो रुजा धातुपाका-
दिना चन्द्रमर्द्री ॥ कटाहे यथाऽऽलोडयेज्जात-
वेदा वियोगापवादाः शमं न प्रयान्ति ॥ ७ ॥

अर्थ—राहु सप्तम भावमें हो तो वह मनुष्य आगके ऊपर चढायी कढायी जैसे संतप्त रहे यद्वा उसकी स्त्रियां इतने रोगी रहें कि भट्टीके ऊपर धातु रसादि) तथा पाकादि कडाहीमें घुटतेही रहें तथापि स्त्रीहानि होवे और बंधुजनोंका वियोग (बिछुडना)होवे लोकापवादों (झूठे फलों) से कभी शांति न पावे प्र०)स्त्रियोंसे विरोध रहे प्राणांत कष्ट स्त्रीसंसर्गसे होवे स्त्री उसकी प्रचण्ड झगडालू रोगी क्रोधी होवे ॥ ७ ॥

नृपैः पंडितैर्वंदितो निन्दितः स्वैः सकृद्भाग्य-लाभोऽसकृद् भ्रंश एव॥धनं जातकं तं जनाश्च त्यजन्ति श्रमग्रंथिकृद्रन्ध्रगो बध्रशत्रुः ॥८॥

अर्थ–राहु अष्टम भावमें हो तो अतिश्रम करनेसे पेटमें वातरोग (वायुगोला) नल प्लीहा आदि होवें अपने मनुष्य इसे त्याग देवें पिताका धनभी न मिले राजा तथा पंडित इसकी वन्दना सेवा करें अपने मनु-ष्य निन्दा करें और कभी ऐश्वर्य घट बढ जाया करे नित्य एकसा न रहे, गुप्त रोगसे पीडा रहे प्रमेह सुजाक आदि रोग रहें वृषण (अण्डकोश) बढे धनहानि होवे ॥ ८ ॥

मनीषी कृतं न त्यजेद्बन्धुवर्गं सदा पालयेत्पूजि-तः स्याद्गुणैः स्वैः ॥ सभाद्योतको यस्य चेत्त्रि-त्रिकोणे तमः कौतुकी देवतीर्थे दयालुः ॥९॥

अर्थ–जिसका राहु नवम भावमें हो वह मनुष्यबुद्धि-मान् तथा अपने शुभ गुणोंसे पूजित (मान्य) दयावान् होता है देवता एवं तीर्थमें प्रेमपूर्वक प्रसन्न रहे सभामें

अपने गुण तथा चातुर्यसे सभाकोभी प्रकाशित करे और कृतज्ञ (उपकारी) का आसन गुण माने सर्वदा बंधुवर्गका पालन करे.(प्र०) ऐश्वर्य (भाग्य) अल्प होवे भाइयोंसे विरोध रहे दरिद्री होवे अनेक प्रकार पीडा रहे धर्म तथा धननाश होवे सुख न मिले पितासे विरोध रहे ॥ ९ ॥

सदा म्लेच्छसंसर्गतोऽतीव गर्वं लभेन्मानिनी-
कामिनीभोगसुखैः।जनैर्व्याकुलोऽसौसुखंनाधि-
शेते मदार्थव्ययी क्रूरकर्मा खगेऽगौ ॥१०॥

अर्थ–जिसका राहु दशम भावमें हो तो वह मनुष्य उन्माद (प्रमाद) से धन व्यय करे क्रूर (दुष्ट) कर्म करे इसीसे लोगोंसे व्याकुल रहे सुखसे नींदभर न सोवे म्लेच्छ चांडालोंका संसर्ग(सोहबत)रक्खे अतिउ-त्तमा यौवनगर्विता स्त्रीसे संभोगसुख पावे. (प्र०)संपूर्ण सौख्य मिले राजसन्मानसे सकल शुभफल मिले और पिताका सुख तो कदाचित्भी न मिले ॥१०॥

सदाम्लेच्छतोऽर्थं लभेन्मा[illegible]

व्रजेत् किं विदेशम् ॥ परार्थाननर्थी हरेद्धूर्त-
बन्धुः सुतोत्पत्तिसौख्यं तमो लाभगश्चेत्॥११॥

अर्थ-राहु ग्यारहवें भावमें हो तो उस मनुष्यको पुत्रोत्पन्न होनेका सुख बहुधा होवे म्लेच्छ (चांडाल आदियोंसे धन पावे गर्वी (घमंडखोर) होवे विना भृत्य (खिदमतगार) के कहीं भी न जावे विदेश क्यों जावे अर्थात् घर बैठेही सब कुछ पावे इसके भाई मित्र धूर्त होवें पिशुनता (ठगपनी) से भी कार्य अन-र्थके करे पराई वस्तुभी हरण करे अथवा इसकी दुष्ट-ताके भयसे लोग आपही अपनी वस्तु इसे दे देवें. (प्र०) समस्त धनलाभ होवे सुख मिले राजा वा राजपुरुषसे मान मिले वस्त्र सुवर्ण चतुष्पदसे सुख मिले सर्वत्र जय होवे किंतु आलसीभी रहे ॥ ११ ॥

तमो द्वादशे दीनतां पार्श्वशूलं प्रयत्ने कृऽतेन-
र्थतामातनोति॥खलैर्मित्रतां साधुलोके रिपुत्वं
विरामे मनोवांछितार्थस्य सिद्धिम् ॥ १२ ॥

अर्थ-बारहवें भावका राहु दरिद्रता तथा बगल (पार्श्व) में शूलादि वातपीडा करता है खल (दुष्ट) जनोंसे मित्रता साधु सज्जनोंसे शत्रुता (वैर) करता है यत्नसे कुछ कार्य कियेमेंभी उलटे कार्यहानि होवे तथापि मनसे चिंतित कार्यके परिणाम (आखिर) में सिद्धि होवे (प्र०) नेत्र रोग रहे पैरमें जखम होवे प्रपंची तथा वाचाल चतुर होवे दुष्टजनोंसे प्रेम रहे ॥ १२ ॥

इति राहुभावफलानि

अथ केतुभावफलानि

तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्ता तथा दुर्जनेभ्यो भयं व्याकुलत्वम् ॥ कलत्रादिचिन्ता सदोद्वेगता च शरीरे व्यथा नैकधामारुती स्यात्॥ १॥

अर्थ-जिसका जन्ममें केतु लग्नका हो तो भाइयोंका क्लेश करे दुर्जन(दुष्ट मनुष्योंसे भय पावे व्याकुलत रहेस्त्रीपुत्रादिकोंकी चिंता रहे मनमें उद्वेग रहेचित्तस्थिर न रहे शरीरमें वायुरोगकी व्यथा अनेकप्रकारकी रहे॥

धने केतुरव्यग्रता किं नरेशाद्धने धान्यनाशो मुखे रोगकृच्च ॥ कुटुम्बाद्विरोधो वचःसत्कृतं वा भवेत्स्वे गृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम् ॥२॥

अर्थ–केतु दूसरे भावमें हो तो धनके विषयमें राजपक्षसे व्यग्रता(धोखा)रहे अन्नका नाश अर्थात् अन्नकी नित्य चिंता रहे अथवा जिस स्थानका आश्रय रक्खे उसकी हानि होवे मुखमें रोग रहे कुटुंब तथा मित्रोंके साथ विरोध रहे सत्कारयुक्त वचनभी उसके मुखसे न निकले परंतु यदिकेतु अपनी राशि (मेष) का वा मिथुन कन्याका होवे तो संपूर्ण शुभफल होवे ॥२॥

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं धनं भोगमैश्वर्य-तेजोऽधिकं च ॥ सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडा भयोद्वेगचिन्ताकुलत्वं विधत्ते ॥ ३ ॥

अर्थ–केतु तीसरे भावमें हो तो धन,विषय,ऐश्वर्य, तेज अधिक होवे शत्रु नाश होवे तथापि वारंवार विवाद (कलह) होवे मित्रपक्षी हानि होवे बाहु (बाँहें) में

पीडा रहे भय (डर) उद्वेग घबराहट और चिंता (फिकर) नित्य लगे रहें ॥ ३ ॥

चतुर्थे न मातुः सुखं नो कदाजित्सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति ॥ शिखी बन्धुवर्गात्सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नो वसेत्स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ॥४॥

अर्थ--केतु चौथे भावमें हो तो माताका सुख न मिले तथा मित्रोंसेभी सुख न मिले पिताके कमाये धनादि न मिले अपने घरमें बहुत कालपर्यंत न रहे रहेभी तो चित्त प्रसन्न न रहे बहुधा परदेशमें रहा करे यदि अपने उच्च (धन) राशि अपने राशि (मीन) का हो तो बंधु वर्गादिसे सुख मिले ॥ ४ ॥

यदा पञ्चमे राहुपुच्छं प्रयाति तदा सोदरे घातवातादिकष्टम् ॥ स्वबुद्धिव्यथा संततं स्वल्पपुत्रः स दासो भवेद्वीर्ययुक्तो नरोऽपि ॥५॥

अर्थ--केतु पंचम भावमें हो तो भाइयोंको शस्त्रादिसे घात तथा वायुरोग आदिसे कष्ट होवे अपनीही

बुद्धिके गलतीसे शरीरमें क्लेश होवे संतान अल्प(थोडी होवे और यह मनुष्य बलवान् रहे तथापि पराया दास (तावेदार) रहे ॥ ५ ॥

तमः षष्ठभागे गतं षष्ठभावे भवेन्मातुलान्मा-
नभङ्गो रिपूणाम् ॥ विनाशश्चतुष्पात्सुखं
तुच्छचित्तं शरीरे सदाऽनामयं व्याधिनाशः६

अर्थ--केतु छठे भावमें हो तो मामासे मानहानि होवे शत्रुनाश हो गौ भैंस आदि पशुसे सुख मिले मन हीन(अल्पसार)रहे और शरीर सर्वदा निरोगी रहे ६

शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिंता निवृत्तः
स्वनाशोऽथ वा वारिभीतिः ॥ भवेत्कीटगः
सर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो
व्यग्रता चेत् ॥ ७ ॥

अर्थ--केतु सप्तम भावमें हो तो मार्ग(सफर)संबंधी चिंता बहुत रहे संगृहीत धनका नाश होवे अथवा जलसे भय होवे स्त्री आदियोंको पीडा होवे धन व्यय बहुत होवे

मनमें क्रोध भरा रहे यदि केतु सप्तम वृश्चिक राशिका हो तो सर्वदा लाभ देता है ॥ ७ ॥

गुदं पीड्यतेऽर्शादिरोगैरवश्यं भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः॥भवेदष्टमे राहुपुच्छेऽर्थलाभः सदा कीटकन्याजगो युग्मकेतुः ॥ ८ ॥

अर्थ-केतु अष्टम भावमें हो तो उसकी गुदा अर्श बवासीर भगंदर आदिसे पीडितरहती है वाहन (सवारी) से भय होता है अपना अपने काम न आवे यदि केतु अष्टम वृश्चिक कन्या मिथुन राशियोंमेंसे किसीका हो तो सर्वदा लाभ होवे ॥ ८ ॥

शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशः सुतार्थी भवेम्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः ॥ सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धिं तदानीम् ॥ ९ ॥

अर्थ-केतु नवम भावमें हो तो भाइयोंको व्यथा (पीडा) रहे बाहु (भुजा) ओंमें अपनेभी रोग रहे जो

कुछ जप तप दान धर्म करे उसमें उपहास(ठट्ठा) होवे म्लेच्छादि नीच जातिसे भाग्य (ऐश्वर्य)बढे क्लेश नाश होवे और और पुत्रकी इच्छा बहुत रहे ॥ ९ ॥

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुस्तदा दुर्भगं कष्टभाजं करोति ॥ तदा वाहने पीडितं जातु जन्म वृषाजालिकन्यासु चेच्छत्रुनाशम्॥१०॥

अर्थ-जिसका केतु दशम भावमें हो वह दुर्भग (कमबख्त)कुरूप दुःख भोगनेवाला क्लेश सहारनेवाला होताहै कदाचित् वाहन (सवारी) के निमित्त पीडित (दुःखी)रहे पिताका सुख न पावे यदि मेष१वृष२वृश्चिक ८कन्या६ राशिका हो तो शत्रुनाश करता है ॥१०॥

सुभाग्यः सुविद्याधिको दर्शनीयःसुगात्रः सुवस्त्रः सुतेजोऽपि तस्य ॥ दरे पीड्यते संततिर्दुर्भगा च शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति ॥ ११ ॥

अर्थ-ग्यारहवें भावका केतु समस्त वस्तुमात्रका लाभ करताहै तथा वह मनुष्य अच्छे ऐश्वर्यवान् अधिक

वियावाला सुंदरांग(दर्शनीय) तेजवान् प्रतापी अच्छे वस्त्र भूषण पहरनेवाला होता है किंतु उसकी संतती दुर्भगा (भाग्यहीन होती) हैं तथा डर (भय) से पीडित रहता है ॥ ११ ॥

शिखी रिःफगो बस्तिगुह्यांघ्रिनेत्रे रुजा पीडनं मातुलान्नैव शर्म॥सदा राजतुल्यं नरं सद्व्ययं तद्रिपूणां विनाशं रणेऽसौ करोति ॥ १२ ॥

अर्थ—केतु बारहवें भावमें हो तो उस मनुष्यको राजाओंके तुल्य सुख भोगनेवाला करता है अच्छे मार्गमें धन व्यय करता है बस्ति (नाभी) के नीचे गुह्य (लिंग) अंघ्रि (पैर) और नेत्रोंमें रोग रहते हैं मामाके पक्षसे सुख नहीं मिलता ॥ १२ ॥

चमत्कारचिंतामणौ यत्खगानां फलं कीर्तितं भट्टनारायणेन ॥ पठेद्यो द्विजस्तस्य राज्ञां समक्षे प्रवक्तुं न चान्ये समर्थाः समर्थाः ॥

अर्थ—यह चमत्कारचिन्तामणिनामकग्रंथनारायण

भट्टने लोकोपकारार्थ बनाया। इसमें जो ग्रहोंके भावफल हैं इन्होंको जो द्विज (ब्राह्मण) आदि ३ वर्णोंमेंसे पढे वह राजाओंके सभामें चमत्कार फल कहनेमें चतुर होवे अन्य समर्थी उसके आगे कहनेको समर्थ नहीं होते॥

यथाबुद्धि टीका महीशर्मणा श्रीचमत्कारचिन्तामणेर्लोकवाण्या। महाश्रेष्ठिनोऽनुज्ञया चापलं मे क्षमध्वं बुधा बोधिनी बालकानाम् ॥

श्रीचमत्कारचिंतामणि नामक ग्रंथकी बालकोंको बोधकरनेवाली टीका सरल देशभाषामें सेठ गंगाविष्णुजीकी आज्ञानुसार महीधर शर्माने यथामति रची इसमें जो कुछ चापल हो उसे विद्वज्जन क्षमा करें॥ १ ॥

इति महीधरविरचितचमत्कारचिन्तामणि भाषाटीका समाप्त।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई.

"काश्यां मरणान्मुक्तिः" यह भाव दृढ़ भरा हुआ है। इसी अभिप्रायानुसार काशी के नाम की दोहाई देकर अब भी अनेक जन स्वकार्य (लोक-परलोक) साधन करते हैं।

चट्टोपाध्याय मुखोपाध्यायादि उप-पद की एक भक्ति और सम्मान आकर्षणी शक्ति है। चक्रवर्ती पदवी भी किसी समय बड़े सम्मान की थी, इसीसे बंगाल में एक प्रकार से चक्रवर्ती ब्राह्मण ही मुखोपाध्याय हुए हैं। यह मुखोपाध्याय नाम सम्मान की आकर्षण शक्ति वश हुआ है। जैसे नाम से फल प्राप्त होता है वैसे ही उप-पद या पदवी से भी फल प्राप्त होजाता है। जहां नाम से फल न मिले वहां उप-पद सहित नामाक्षर गिनने की विधि है, गुण और शक्ति जन्मगत और वंशगत है। समष्टि और व्यष्टि दोनों पर ध्यान रखना उचित है। प्रश्न कर्ता की प्रश्नाक्षर संख्या से यह निर्णय करके उसका भी शुभाशुभ फल कहा जाता है।

चतुर्थ परिच्छेद-काल चक्रदशा ।

कालचक्रदशानुसार नाम से जीवन का शुभाशुभ फल और उस फल का समय निर्णय होसकता है । इस दशा के मत से सूर्यादि सात ग्रहों की दशा भोग्य है । प्रत्येक ग्रह की दशा का भोग्य काल द्वादश वर्ष है । अतः ८४ वर्ष दशा का भोग्य काल है, तथा रवि वार आदि वार क्रम से दशाएं भोगी जाती हैं जिस ग्रह की दशा प्रथम होगी उस से गणना आरम्भ होगी, यदि किसी का जन्म बृहस्पति की दशा में हो तो प्रथम बृहस्पति फिर शुक्र शनि, रवि, इत्यादि । आयुर्वेद के मत से १२ वर्ष पीछे लोगों का धातु और स्वास्थ्य परिवर्तन होता है । इस गणना के साथ उस उक्ति का सौसादृश्य है । यथार्थ में सात ग्रह और द्वादश राशि द्वारा ही संसार के सब कार्य सम्पन्न होते हैं ।

कालचक्रदशा निर्णय का गढ रहस्य ।

द्वादशराशि और सप्त ग्रह ही समस्त जगत् रचना के मूल कारण हैं। १२×७=८४ इसके भीतर अनेक योग तत्व हैं योगिगण इन्हें दिव्य नेत्रों से दर्शन करते हैं प्रत्येक मनुष्य अपने अंगुलों से ८४ अंगुल ऊंचा होता है। सृष्टि तत्व के सब कार्य एक मर्यादा नियम द्वारा नियन्त्रित हैं।

दशा निर्णय प्रणाली— नाम के प्रथमाक्षर संख्या द्वारा जन्म दशा का निर्णय किया जाता है, आदि अक्षर की संख्या (०) शून्य होने से दूसरे अक्षर की संख्या से दशा का निर्णय किया जाता है। जिस ग्रह और जिस अक्षर की जो संख्या है वह (२८ से ३८ पृष्ठ में) पीछे देखिये। यदि कोई ठीक वार प्रवृत्ति या सूर्योदय के समय जन्में तो जिस दशा में जन्मेगा उसकी पूर्ण अर्थात् १२ वर्ष भोग्य होगी, नहीं तो अनुपात (त्रैराशिक) द्वारा निर्णय कर लीजिये। इस से भुक्त और भोग्य दशा इष्ट काल से आजायेंगी। २४ घंटे में १२ वर्ष १ घंटे में ६ मास, १० मिनिट में १ मास

१ मिनिट में ३ दिन। इस नियमानुसार सहज में भुक्त और भोग्य दशा जानी जायगी, भोग्य दशा के साथ अगली दशा की वर्ष जोड़कर अभीष्ट दशा का फल विचार करो।

जन्मकुण्डली से जन्म दिन के ग्रहों की स्थिति जानकर सूक्ष्म रूप से फल निर्णय किया जा सकता है— यह अनेक व्यक्तियों की कुण्डली से मिलान किया जा चुका है।

अन्तर्दशा निर्णय की रीति— प्रत्येक ग्रह की दशा १२ वर्ष में उस ग्रह की तथा शेष ६ ग्रहों की क्रमानुसार अन्तर्दशा भोग्य होती है, प्रत्येक ग्रह की अन्तर्दशा का परिमाण १ वर्ष ६ मास १७ दिन ६ घटी ३८ पल २० विपल है। प्रथम भोग्य महादशा निर्णय करके पश्चात् भोग्य अन्तर्दशा निर्णय करनी चाहिये।

उदाहरण—संवत् १९९९ पूषशुदि के २२ सू-

यांश पर रात के ६ बजे किसी व्यक्ति का जन्म हुआ, (हमारी बनाई ज्योतिर्विज्ञान कल्पलतिका, २य संस्करण पृष्ठ १११ बंगला देखिये, (यदि इस वर्ण परिचय को अध्यापकों, वैद्यों और ज्योतिषियों ने देखकर २०० महानुभावों ने ग्राहक श्रेणीमें अपना नाम लिखाया तो उसका हिन्दी अनुवाद भी शीघ्र आरम्भ किया जायगा बंगलाक्षरों में उस ग्रन्थ का मूल्य ५) है। इसके अनुवाद की स्वीकृति रचयिता महोदय मुझे प्रदान कर चुके हैं—अनुवादक) उस दिन सूर्य उदय ५ बज कर १५ मिनट पर है सूर्यास्त ६।४० रात्रि के ६+१२ =२१ घंटा ५ घ० १५ मि० (सू०उ०) =१५ घं० ४५ मि० । उक्त व्यक्ति के नामका आदि अक्षर (र)=२ चन्द्र। चन्द्रमा की दशा में जन्म। चन्द्र की दशा १२ वर्ष में ७ वर्ष ६ मास भुक्त होगये ४ वर्ष और ३ मास भोग्य शेष रहे। इस कारण चन्द्र की दशा में शुक्र के अन्तर में जन्म हुआ।

	व०	मा०	दि०	घ०	प०	वि०	फल
च०शु०भोग्य	०,	९	२५	४२	५१	२६	कोषवृद्धिपीड़ा
च०श०	१,	८	१७	८	३४	१७	प्रीहायकृतादि
च०र०	१,	८	१७	८	३४	१७	स्वास्थ्योन्नति

४ व० ३ मास

मंगल १२ वर्ष ———— भूमिलाभ मिश्रफल

१६व० ३मास

बुध १२ वर्ष ———— कर्मक्षेत्र में प्रवेश

२८ व० ३ मा

गुरु १२ वर्ष ———— शुभफल सन्तानादि

४०व० ३ मास

शुक्र १२ व० ———— लाभ कर्मोन्नति

५२ व० ३ मास

शनि १२

६४व० ३ मास

रवि १२

७६ व० ३ मास

हमने इस व्यक्ति के जीवन का फलाफल कुण्डली द्वारा भी उक्त कालचक्र दशानुसार मिलाये हैं, अन्यान्य व्यक्ति भी इसी प्रकार फल निर्णय करके मिला लेवें । जन्मकुण्डली से फल सूक्ष्मरूप से मिलाया जाता है ।

पञ्चम परिच्छेद ।

पुकारने के नामसे वर कन्या का विधि मिलाना

वर कन्या के जन्मपत्रिका के अभाव मे दोनों के पुकारने के नाम से मिलान हो सकता है । यह प्रथा प्राचीन ऋषियों को विदित थी. आज कल उस प्रथा को न जानने पर भी उस प्रकार के मिलान करनेकी चेष्टा और प्रयास देखा जाता है।

४० पृष्ठ में लिखी हुई वर्ण संख्या और लिंगज्ञापक सूची देखिये । जिस वर के नामका प्रथम अक्षर पुं वर्ण हो, उसके समान और मित्रग्रह के वर्गस्थ पुं और स्त्रीवर्ण नामाद्यक्षर विशिष्ट कन्या

के साथ उसकी विधि मिलाना ठीक और उत्तम होगा, पुंवर्णाक्षरा कन्या के साथ स्त्रीवर्णाक्षर वर का मिलान सुखजनक न होगा। कारण कि वह ललना उसकी आज्ञापालन (वश्यता) स्वीकार करने में असमर्थ होगी। स्त्रीवर्णाक्षर वर के लिये उसके अनुरूप स्त्रीवर्णाक्षरा कन्या विधेय है। नहीं तो उसे स्त्री की आधीनता स्वीकार करनी पड़ेगी। विधि मिलानेका चक्र आगे देखिये।

सब अक्षरों पर ग्रहों का अधिकार।

वर्गाः क-च-ट-त-पाद्याः कुजादि तारा ग्रहाणाम्।
सूर्यस्य हि स्वरवर्णाः चन्द्रस्य च यकाराद्याः ॥"
ज्योतिषतत्त्वे ॥

सूर्यके वर्ण—समस्त स्वरवर्ण — सत्वगुणात्मक
चन्द्रके „ —यरलवशषसह „
मंगल के —कवर्ग (क-ख-ग-घ-ङ) तमोगुणात्मक
बुध के —चवर्ग (च-छ-ज-झ-ञ) रजोगुणात्मक
गुरु के —टवर्ग (ट-ठ-ड-ढ-ण) सत्वगुणात्मक

शुक्र के —तवर्ग (त-थ-द-ध-न) रजोगुणात्मक
शनि के —पवर्ग (प-फ-ब-भ-म) तमोगुणात्मक

जिस ग्रह का जो वर्ण है उसी ग्रह के गुणानुसार उत्पन्न व्यक्ति के नाम के आद्यवर्ण और संशोधित वर्णानुसार जीवनमें सत्वादि गुण प्रकट होते हैं।

नियम-पुंवर्णाद्यक्षर नामक पुरुष से पुंवर्णाक्षर आदि में हो ऐसी स्त्री का मिलान उत्तम है, स्त्रीवर्णाद्यक्षर नामा स्त्री तो अति उत्तम है एवं स्त्रीवर्णाद्यक्षर पुरुष के साथ पुंवर्णाद्यक्षरा स्त्री का मिलान अधम है। समान वर्णस्थ और मित्रग्रह के वर्गस्थ समान वर्ण उत्तम है। शत्रुग्रह के समान वर्ण अधम है।

ग्रहों के मित्र सम और शत्रु का विवेक।

मित्राणि सूर्यात्कुशशि भौमजीवाः,
सूर्येन्दुजौ सूर्यशशांकजीवाः।
आदित्यशुक्रौ रविचन्द्रभौमाः,
बुधार्कजौ चन्द्रजभार्गवौ च।

सितासितौ चन्द्रमसौ न कश्चिद्-
बुधः शशी सौम्यमितौरवीन्दू ।
रवीन्द्रभौमा रवितस्त्वमित्रा,
मित्रारिशेषाश्च समाः प्रदिष्टाः ॥

(इति दीपिका)

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य के	चंद्र-मंगल-गुरु	बुध	शुक्र-शनि
चन्द्र के	रवि-बुध	मं०बृ०शु०श०	०
भौम के	रवि-चन्द्र-गुरु	शुक्र-शनि	बुध
बुध के	रवि-शुक्र	बृह०-शुक्र-शनि	चन्द्र
गुरु के	रवि-चन्द्र-कुज	शनि	बुध-शुक्र
शुक्र के	बुध-शनि	कुज-गुरु	रवि-चन्द्र
शनि के	बुध-शुक्र	गुरु	रवि-चं.-कु.

इसमें विशेषता यह है कि पुंवर्णाक्षर वरके साथ
और स्त्रीवर्णाक्षर कन्याका मिलनशुभ और अतिशय शुभ है
स्त्रीवर्णाक्षर नामा पुरुष केसाथ पुंवर्णाक्षर नामा स्त्री का
मिलन शुभप्रद और सुखजनक नहीं है। परिचित नामों
द्वारा परीक्षा कर लीजिये।

देहरूपी ब्रह्माण्ड में सूक्ष्म और स्थूलरूप से

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
आत्मा	मन	शक्ति	बुद्धि
मरीचि	अत्रि	पुलस्त्य	वशिष्ठ
अहंकार	काम	क्रोध	लोभ
प्राणमय	अन्नमय	—	मनोम
रूप	रस	—	गन्ध
आज्ञा	ममता	प्रताप	सरल
प्राणना	वासना	औद्धत्य	चपल
—	प्रीति	(अभ्युदय, उत्साह)	उद्भाव
दर्शन	मनन	दर्शन	कथन
दण्ड	—	दण्ड	भेद
कटु	लवण	तिक्त	मिश्र
अग्नि	जल	अग्नि	भूमि
ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद्
राजनीति	वाणिज्य	धनुर्वेद	आयुर्वे
—	कृषि	—	विज्ञा
ताम्र	कांस्य	स्फटिक	स्वर्ण
अस्थि	रस रक्त	मज्जा	मांस-त्वं
दक्षिण चक्षु	वाम चक्षु	नाभि-पीठ	हाथ पां
मस्तकमुख	वक्षकण्ठ	नासा, कपाल	जीभ,
	आंत	दन्त गुदा	
वामचक्षु	दक्षिणचक्षु	मलद्वार	

उक्त सप्तऋषि या देवता देहब्रह्माण्ड के

नामाद्यक्षरानुसार वरकन्या के विधि मिलानेका चक्र

वरके नामका आदि अक्षर	कन्या के नामका आद्यक्षर	मिलान
स्वरवर्ण	स्वर-अन्तस्थ-क-टवर्गस्थअक्षर	उत्तम
	चवर्गस्थ वर्ण	मध्यम
	प त, वर्गस्थ वर्ण	अधम
अन्तस्थवर्ण	अन्तस्थ-स्वर-चवर्गस्थ वर्ण	उत्तम
	क ट त प वर्गस्थवर्ण	मध्यम
कवर्गस्थवर्ण	स्वर-अन्तःस्थ-क-टवर्गस्थवर्ण	उत्तम
	पवर्गस्थ वर्ण	मध्यम
	चवर्गस्थ अक्षर	अधम
चवर्गस्थवर्ण	स्वर और तवर्गस्थ वर्ण	उत्तम
	ट-त-प वर्गस्थ ,,	मध्यम
	अन्तःस्थ वर्ण	अधम
टवर्गस्थवर्ण	स्वर-अन्तःस्थ कवर्गस्थवर्ण	उत्तम
	पवर्गस्थ वर्ण	मध्यम
	च, त वर्गस्थ वर्ण	अधम
तवर्गस्थवर्ण	च, प ,, ,,	उत्तम
	क, ट ,, ,,	मध्यम
	स्वर और अन्तःस्थ वर्ण	अधम
पवर्गस्थवर्ण	च, त वर्गस्थ वर्ण	उत्तम
	ट वर्गस्थ अक्षर	मध्यम
	स्वर-अन्तःस्थ-कवर्गस्थ वर्ण	अधम

इसमें विशेषता यह है कि पुंवर्णाद्यक्षर वरके साथ पुं और स्त्रीवर्णाद्यक्षर कन्याका मिलनशुभ और अतिशय शुभ है, स्त्रीवर्णाद्यक्षर नामा पुरुष केसाथ पुंवर्णाद्यक्षर नामा स्त्री का

						शुक्र	
...आत्म	आत्मा	मन	शक्ति	बुद्धिस्मृति	ब्रह्मज्ञान	श्रेय	ध्या...
...षि	मरीचि	अत्रि	पुलस्त्य	वशिष्ठ	अंगिरा	भृगु	पुल...
	अहंकार	काम	क्रोध	लोभ	मोह	मद	मात...
	प्राणमय	अन्नमय	—	मनोमय	विज्ञानमय	आनन्दमय	
	रूप	रस	—	गन्ध	शब्द	—	स्पर्श
...और	आज्ञा	ममता	प्रताप	सरलता	औदार्य	विलास	कांति...
	प्राणता	वासना	औद्धत्य	चपलता	गाम्भीर्य	सौन्दर्य	मा...
—	—	प्रीति	(अध्यव.उत्साह)	उद्भावनी	विस्तार	शृंखला	संको...
	दर्शन	मनन	दर्शन	कथन	श्रवण	घ्राण	स्पर्श
	दण्ड	—	दण्ड	भेद	साम	दान	भेद
	कटु	लवण	तिक्त	मिश्र	मधुर	अम्ल	कषा...
	अग्नि	जल	अग्नि	भूमि	आकाश	जल	वायु
	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरत्	हेमन्त	वसन्त	शीत
	राजनीति	वाणिज्य	धनुर्वेद	आयुर्वेद	धर्मशास्त्र	गन्धर्व	तन्त्र...
—	—	कृषि	—	विज्ञान	वेदान्त	कला	प्राची
	ताम्र	कांस्य	स्फटिक	स्वर्ण	[illegible]	रौप्य	लोहा
	अस्थि	रस रक्त	मज्जा	मांस-त्वक्	[illegible]	वीर्य	स्नायु
...कृतांग	दक्षिण चक्षु	वाम चक्षु	नाभि-पीठ	हाथ पांव	कटि उरु	वरांग चिबुक	निम्...
	मस्तकमुख	वक्षकण्ठ	नासा, कपाल	जीभ, [illegible]	यकृत तालु	हनु मूत्र	प्लीहा...
		आंत	दन्त गुदा		हृदय [illegible]	कोष	जानु
...श्रीपद्धे	वामचक्षु	दक्षिणचक्षु	मलद्वार			गर्भाशय	—

उक्त सप्तऋषि वा देवता देहब्रह्माण्ड के समस्त कार्य करते हैं।

ह्रस्व दीर्घ ज्ञान।

जीव सृष्टि का सब से उच्च संस्करण सब से छोटा मनुष्य है मनुष्य के मुख से प्रथम 'अ' स्वर फिर उस का दीर्घ 'आ' स्वर उच्चारण होता है। 'अ' उच्चारण करने में थोड़ा मुख खोलते हैं "आ" के उच्चारण में उस की अपेक्षा अधिक हां करने का मुख गह्वर प्रसारित करते हैं। इसी कारण 'अ' ह्रस्व है इस का दीर्घ 'आ' है। प्रथम पांच ह्रस्व स्वर उत्पन्न हुए। फिर उन पांच स्वरों से समस्त ब्रह्माण्ड के विषय प्रगट करने को वर्ण और भाषा उठाई गई (उत्पत्ति की गई)। ह्रस्व और दीर्घ वर्णों में प्रभेद– व्याप्ति और प्रसारण एवं समय की कमी बेशी है। यह समस्त जगत् पांच स्वरों के अन्तर्गत है। मानव जाति के शैशव अवस्था में शिशु की भांति आज एक कल एक तथा पांच दिन पश्चात् फिर एक. इस प्रकार परस्पर मनोभाव प्रगट करने को आवश्यकतानुसार वर्ण और भाषा

की सृष्टि हुई थी, अन्यान्य प्राणियों में भी अपने मन का भाव प्रकट करने की भाषा होती है।

मनुष्य का प्रथम शब्द।

अहम् (मैं) आहम् आम् (हम] आम्मा (मा) अम्बा (मा) हम्बा (मा) (आमि) मैं। मैं मैं। बंगला का पद।

आमि। आमि- आमि। आमि, आमि आमि

आमि, आमि, आमि, आमि, आमि। आमि, आमि, आमि, तुमि, आमि से अग्नि। उपदेश करते हैं कि- पृथ्वी, अग्नि, अन्न और आदित्य ये चार हमारे तनु (शरीर) हैं। उन शरीरों में आदित्य के भीतर जो पुरुष दिखाई पड़ता है वह पुरुष मैं ही हूं। मुझे (मैं) को पहचान लेने ही से जन्म सार्थक है।

" वह सब अनित्य मैं ही नित्य सार।
नाम रूप से मैं जगत में प्रचार॥

प्रथम पाठ।

१। क ह ५—च व (व) ६—ट म १३—ए प

२। ख स ६—छ ल १०—ञ भ १४—नं नं

३— ग ष ७—ज श ११—झ ह १५—थ प

४— घ श ८—भ ष १२—ड क्ष १६—द ज्ञ

१— क का अर्थ जल, ख का अर्थ आकाश। सृष्टि का उपादान कारण जल और आकाश है।

प्रश्न। क— खु? खु कौन? उत्तर। निश्चय आकाश ख है।

तब प्रश्न करो कहता है (कह) कुछ ठीक, यही उत्तम बात कहता है यही शिष्य की शिक्षा कह अर्थात् बोलो। कहिये लीजिये।

क—जल। ख—रस। रस ही जल है जल ही रस है। आदि की अवस्था (दशा) में यही का जल सम्पन्न है।

क—जल। ख—जल। पार्थिव समुद्र का जल और आकाश समुद्र का जल साधारण जल ही किसी समय एकाकार अवस्था में था।

क=राजा। ह=विष्णु। एक विष्णु ही समस्त जगत् का राजा है।

प्रश्न-कह? कः=कौन, ह=चन्द्र। चन्द्र क्या है या कौन है? अस्वर्ग का राजा चन्द्र है। जो भारतमें आता है इसीसे चन्द्रवंश प्रकट हुआ है।

क ह। क=देह। ह=शिव। देहस्थ आत्मा ही मंगलमय शिव है। यदि यह शिव न रहे तो बिना उसके देह शव है। (मृतक है मुर्दा है)

क ह। क=शब्द। ह=आकाश। कहका अर्थ शब्द तन्मात्रा आकाश है।

क ह। क=ब्रह्मादि देवता। ब्रह्मा, विष्णु, शिव। ह=शून्य। अर्थात् नभोमण्डलस्थ सूर्य, जिसमें उक्त तीनों देवता विद्यमान हैं।

क=दीप्ति। ह=आकाश। कह का अर्थ हिरण्यमयदीप्ति।

क=पक्षी। ह=आकाश। कह का अर्थ पक्षिराज गरुड़।

ख स

ख = ब्रह्म । स = विष्णु । "ख ही" विष्णु है ।

ख = शून्य वा आकाश । स = जीवात्मा । जीवात्मा हृदयस्थ आकाश में विराजमान है । ख = सूर्य । स = जीवात्मा । सूर्य ही जीवात्मा रूप से जीवकी देह में अवस्थित है ।

ख = इन्द्रिय । स = चन्द्र । चन्द्र ही इन्द्रियों का नेता है ।

ख = देह, पुर, क्षेत्र । स = शिव । आकाश रूप महापुर में, जीवदेहरूप क्षुद्रपुर में एक मंगलमय शिव विराजमान है ।

गष — ग = गन्धर्व, गगन, गीत, सुमेरु, स्वर्ग ।
ष = केश, शिक्षक, नाश, शोभन, विज्ञ ।

ग = सुमेरु । ष = शेष । गष = पृथिवी की शेष सीमा सुमेरु पर्वत है । गष = सुमेरुपर्वतस्थ देवता और ऋषिगण ही जगत् के शिक्षक रूप से आविर्भूत हैं । गष = अति मनोहर सौन्दर्यपूर्ण ग्रह नक्षत्र खचित, आकाश इत्यादि ।

एवं अक्षरों का संमिश्रण (पारस्परिक और आभ्यन्तरिक) करने से जो शब्द बने हैं उनका अर्थ किसी न किसी भाषा में व्यवहृत है। वास्तव में अक्षर शुद्ध अनन्त और आत्मा की अनन्त है।

इति शिवम् ।

॥ प्रथम भाग समाप्त ॥

इति ॐ तत्सत् ॐ



औषधि तथा हरिद्वारकी अन्यवस्तुओंके

वी·पी· द्वारा घर बैठे मंगवाने की सुविधा।

(१) दादकी अनुभूत औषधि—यह औषधि गोमूत्र में मिलाकर लगाने से कागजी या भैंसा दाद कैसा ही हो ३ दिन में खुजली बंद होजाती है और नये पुराने दाद तथा उपदंश के चकते भी इससे अल्प काल में अच्छे होजाते हैं मूल्य =) तोला।

(२) शिलाजीत शुद्ध १) और अशुद्ध ।) तोला वनौषधि. दशमूल, शिवलिंगी, जियापोता (पुत्र-जीवी निर्गुण्डी, ब्राह्मी सूखी ३॥) सेर। पीपल का बंदा। शिरिष का बंदा। शीशम का बंदा। इत्यादि। सुदर्शन चूर्ण। दांतों का मंजन =) तोला।

रक्त प्रदर की शर्तिया अनुभूत औषधि मूल्य १) तोला आराम होनेपर इनाम पृथक्।

बारहसिंगा के सींग १) सेर।

हरिद्वार के प्रसिद्ध कम्बल मूल्य ५) से १५)

तक । ऊनी कश्मीरी पट्टी ८ गज का मूल्य १५) रु० से २५) तक । आधी से कम नहीं भेजी जाती ।

(४) ब्लैकलाक स्वर्णमयी बढ़िया स्याही की गोलियों की १२ दर्जन की डिब्बी १।=) पिसी हुई और पौडर ~) तोला ।

(५) बवासीर की औषधि— फकीरों से आराम पर पुस्तकें प्रकाशित करने को श्रद्धानुसार दान. गरीबों से कुछ नहीं केवल डाकव्यय पैकिंग के लिए ।) के टिकट आने चाहियें ।

शालपर्णी १) सेर	अमरबेल ।।।)
कटेरी पञ्चांग ।।) सेर	मूसली सफेद ४)
श्योनाक ।।)	,, काली १।)
अमलतास ।)	कौंच के बीज ।।)
ब्रह्मदंडी १)	गुंजारक्त १।)
शतावरी ।)	नकछिकनी ।) तोला
बला १)	कनेर रक्त ।।) सेर
बिदारीकंद ।।।)	शिवलिंगी ।।) तोला

पंवार के बीज ।।)		मरोड़फली ।।) सेर
काकजंघा ।।)		बांसा ।।) सेर इत्यादि

पता:-
भागीरथ शर्मा ऋषिकुल
हरिद्वार ।

---:o:---

दान और यशका सुअवसर ! अवश्य पढ़िये !!

* आवश्यकता *

नीचे लिखे ग्रन्थों का अनुवाद तयार होकर शीघ्र ही छपेगा, जो महाशय- इन पुस्तकों के छपाने के लिये द्रव्य की सहायता भेजेंगे उनका नाम द्रव्य संख्या सहित उस पुस्तक में छपवा दिया जावेगा तथा कुछ पुस्तकें भी उनको भेट दी जावें-गी- ये पुस्तकें हिन्दी में दुर्लभप्राय थीं, महात्मा श्री युक्त जीवन्मुक्त पं० श्री योगेन्द्रनाथ राय जी

महोदय की इस परम उदारता के लिये हार्दिक धन्यवाद है श्री अन्तर्यामी परमात्मा से उनके कलेवरकुशल मंगल का प्रार्थी हूं कि उन्होंने स्वरचित पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद प्रचार करने की सहर्ष सम्मान पुरस्सर स्वीकृति दी तथा स्वप्रतिष्ठित "ज्योतिष-शिक्षा विस्तार समिति" के सदस्यों की सूची में सस्नेह और सानुरोध नाम लिखाने को उत्साहित किया।

(१) गायत्री उपासना— श्री १०८ युक्त महन्त लक्ष्मणदास जी के द्रव्य दान से मुद्रित १।)

(२) अनन्तगरुड़ रहस्य— पृथ्वी को शेष जी किस प्रकार धारण किये हुए हैं तथा श्री भगवान् का वाहन गरुड़ अन्य देवताओं के वाहनों मयूर, चूहा- नन्दि- सिंहादि की भांति हमने कभी नहीं देखा इसका आध्यात्मिक रहस्य तथा उस में अंग्रेज विद्वानों की सम्मति की व्याख्या है (अनुवाद होरहा है) मूल्य ।-)

(३) उत्कल के पंच तीर्थ— यह पुस्तक ५

अध्याय में पूर्ण है- इस में पुरी, भुवनेश्वर कोना
र्क, विरजाक्षेत्र और महाविनायक क्षेत्र इनका
गूढ़ तत्व लिखित है। धर्म प्राण हिन्दू और पुरी
के यात्री मात्र के अवश्य पाठ करने योग्य उत्कृष्ट
ग्रन्थ का मूल्य ?।)
कलकत्ता हाईकोर्ट के जज महोदय ने तथा बंगवासी
२३ माह १९१३ में इसकी प्रशंसा की है।

(४) ज्योतिर्विज्ञान—कल्पलतिका (विना सहा
यता के ज्योतिष सिखाने का उत्कृष्ट ग्रन्थ महामा
न्य कलकत्ता हाईकोर्ट के विचारपति देश पूज्
न्याय शील श्री युक्त गुरु दास बन्द्योपाध्या
नाईट, सर, शील, श्रीयुत आशुतोष मुखोपाध्या
एम. ए, सरस्वती, नाईट और संस्कृत कालेज
प्राधानाध्यापक पण्डित प्रवर श्री युक्त हर प्रसा
शास्त्री एम, ए, और रिपन कालेज के विज्ञान
ध्यापक श्री युक्त रमेन्द्र सुन्दर त्रिवेदी एम,
प्रमुखमहोदय गण द्वारा और अनेक समाच
[illegible] प्रशंसित। संवादों में इस का म

५) है । ढाईसौ ग्राहकों की नामावली आजाने
छपाने का उद्योग किया जावेगा । अथवा को
दानवीर महोदय इसके लिये अग्रसर हों अथवा
कोई प्रेसाध्यक्ष वा पुस्तक माला सञ्चालक इस
अनुवाद को इस शर्त पर छापना स्वीकार करें
कि छपाई के मूल्य की पुस्तकें आप विक्रयार्थ
लेलेवें शेष पुस्तकें विक्रयार्थ अनुवादक को देना
स्वीकार करें तो इस ग्रन्थ रत्न का प्रकाश हिन्दी
भाषा जानने वाले प्राप्त कर सकेंगे । प्रेसाध्यक्ष
एवं दानवीर महोदय नीचे लिखे पते पर अनुवादक
से पत्र व्यवहार करें ।

श्री शिवनारायण शर्म्मा
अध्यापक
ऋषिकुल-हरिद्वार यू. पी.